RAJBIL26868/2016/1284525
वर्ष 5 अंक 9 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन NEWS

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

होली के पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हिन्दी मासिक पत्रिका मार्च 2023 लक्ष्मणसिंह राठौड़, उप संपादक

पेज संख्या : 36 राजसमंद

होली की सार्थकता

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

अपडेट खबरों के लिए विजिट करें

जयवर्द्धन NEWS

Jaivardhan News

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाशक
ललिता राठौड़

निदेशक व उप सम्पादक
लक्ष्मणसिंह राठौड़

वितरण विभाग
सुधीर दवे

कार्यालय पता
नाकोड़ा कॉम्प्लेक्स, द्वितीय मंजिल
कक्ष नं. 108, सौ फीट रोड
कांकरोली, जिला राजसमंद
मो. 96729-80901

सम्पादक, प्रकाशन एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

सम्पादकीय

इनसे तो लाख दर्जा अच्छे हैं भिखारी और पागल

अपने आस- पास और साथ रहने और काम करने वालों में खूब सारे ऐसे हैं, जिन्हें देख कर दया भी आती है और घृणा के साथ गुस्सा भी। ये लोग अपने से ऊपर वाले भी हो सकते हैं और नीचे वाले भी। साथ वाले भी हो सकते हैं और आस- पड़ोस वाले भी। अब इन्हें कहीं ढूंढ़ने नहीं जाना पड़ता। सब जगह पाए जाने लगे हैं ऐसे किरदार।

अव्वल दर्जे के ये नीच लोग हर काम पराए पैसों से करना चाहते हैं। मुफ्त खाने- पीने और अय्याशी के इन्तजामों को हासिल करने के लिए किसी भी हद तक नीचे गिर जाने को हमेशा तैयार रहते हैं। इनमें न संवेदनशीलता है, न मानवता। न अपने कुल वंश का कोई स्वाभिमान। हरामखोरी और कामचोरी करते हुए, औरों को बेवकूफ बनाते हुए जिन्दगी को भुनाते रहना इन लोगों की सबसे बड़ी खासियत है, जिसके सहारे वे लूट-खसोट, धींगामस्ती और चापलुसी करते हुए अपने आपको परम पूज्य और महान बनाए रखने का भ्रम पाले रहते हैं। विनम्रता, शालीनता और गांभीर्य भावों के मुखौटै धारण करने वाले इन हिंसक और भूखे भेड़ियों को यकायक देखकर इनके कुटिल चरित्र का पता नहीं चलता।

इन लोगों के नीचता भरे स्वभाव, हीन हरकतों और परजीवी मनोवृत्ति को देखकर शर्म आती है और यह कहने को जी चाहता है कि हे भगवान ! ये किस दृष्टि से इंसानी खोल को पाने लायक थे। ये लोग अपने आपको चाहे कितना महान, बुद्धिमान और कर्मयोगी मानते रहें, लेकिन इनके साथ वाले, आस- पास वाले और सारे के सारे परिचित- सम्पर्कित हमेशा यही प्रतीक्षा किए रहते हैं कि कब इनका आकस्मिक और असामयिक राम नाम सत्य हो जाए और पृथ्वी इन नालायकों, नुगरों और पिशाचों के भार से मुक्त हो। अपने आस- पास भी खूब सारे ऐसे हैं। दिमाग पर जोर डालिएं और सूचीबद्ध करते हुए इनके लक्षणों, स्वभाव और गुणधर्म को जानने- पहचानने और समझने की कोशिश करें।

दीपक आचार्य
लेखक व साहित्यकार
बांसवाड़ा, राजस्थान

इस अंक में खास

1. **कवर स्टोरी 1 :** होली की सार्थकता, प्रकृति का क्या है सबक — पेज- 3
2. **तरकस :** मैं शहंशाह ए आलम हूं — पेज – 5
3. **व्यंग्य :** राजसमंदीया होली — पेज- 6
4. **हालात :** यही है जिन्दगी — पेज- 7
5. **मन भायो राजसमंद :** श्री द्वारकाधीश मंदिर, राजसमंद — पेज – 9
6. **सवाल :** प्रेम क्या होता है — पेज – 11
7. **कहानी :** पूर्व प्रधानमंत्री की कहानी कर देगी हैरान — पेज – 12
8. **व्यंग्य :** दुनिया बनाने वाला ही हैरान- परेशान — पेज – 13
9. **पुस्तक समीक्षा :** गीत रजनीगंधा के गाते हैं... डॉ. द्वारकाप्रसाद — पेज – 15
10. **ज्योतिष :** नाक से निकलने वाली सांस तय करती है भविष्य — पेज – 16
11. **कविताएं :** द्वारिका में बस जाओ, बड़े लोग.... बदलाव — पेज – 19
12. **कटाक्ष :** सोशल साइट्स पर आत्म प्रचार और चापलुसी हावी — पेज- 22
13. **व्यंग्य :** बच्ची और भेड़िया — पेज – 23
14. **मेरा गांव मेरे लोग :** स्व. मधु कविश्वरी शर्मा — पेज – 24
15. **मेवाड़ी चौपाल :** पराये खातण जीव खपावणो — पेज – 26

होली की सार्थकता

प्रकृति का क्या है सबक?

उस जमाने में दानवी संस्कृति के परिचायक हिरण्यकश्यप भी थे और सत्ता के मद भरी फायर प्रूफ होलिकाएं भी। अंधे मोह और मद भरी कुर्सियों का वजूद तब भी था और अब भी है। अन्तर सिर्फ इतनाभर हो गया है कि तब एक हिरण्यकश्यप था, एक होलिका थी। आज कई शक्लों और लिबासों में हिरण्यकश्यपों की जमातें हैं, कुर्सी को शाश्वत और अनश्वर मानने वाली होलिकाएं भिन्न- भिन्न रूपों और विचित्र स्वरूपों में हमारे सामने हैं।

इनके रंग अलग-अलग हैं, जो होली पर ही नहीं, बल्कि पूरे सालभर गिरगिटों को भी छकाते लगते हैं। वो जमाना था, जहां दैत्यों से लेकर देवताओं तक की कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं हुआ करता था।

छल-फरेब तो था ही, लेकिन इससे भी आगे बढ़कर सच यह था कि जो जैसा है, वैसा दिखता भी था और होता भी था। आज सब कुछ उलटा- पुलटा हो चला है। आदमी अन्दर से कुछ और है, बाहर से कुछ और, यहां तक कि दांये से कुछ और है और बांये से कुछ और। ऑक्टोपस की तरह इंसान अपना आकार प्रकार बदलते हुए जमानेभर को गुमराह करते हुए अपने उल्लूओं और उनके पट्ठों को सीधे करने से लेकर पटाने तक में जुटा हुआ है। इस मामले में इंसान ने कॉलगर्ल्स, वैश्याओं, बहुरुपियों से लेकर सभी को पीछे छोड़ दिया है। लगता है जैसे पुराने जमाने के शक्ल और सूरत बदलने वाले असुरों का नए अवतारों में आविर्भाव हो चला है।

जो सामान्य हैं वे भी और असामान्य हैं वे भी, सारे के सारे जाने कितने चेहरों, चाल और चलन से एक साथ नॉन स्टॉप कुलांचे भरते जा रहे हैं। जाने कितने रंगों के एक साथ घालमेल ने आदमी के मन को इतना बदरंग बना डाला है कि पता ही नहीं चलता कि असली रंग आखिर है कौनसा।

सच कहें तो आदमी का अपना रंग कहीं खो चला है और आयातित रंगों और रसों के सहारे वह शिखरों को छू लेने का स्वप्न संजोए कभी किसी को पछाड़ देता है, कभी किसी को रुला देता है। इस अंधी दौड़ में उसे न अपनों का बोध है, न परायों का।

हर कोई लगता है, जैसे जीवंत अभिनय का महारथी बहुरूपिया ही हो। रोजाना ढेरों किरदारों को जीते हुए लोगों को मुगालते में रखते हुए आदमी खुद को भी नहीं समझ पा रहा है कि आखिर वह है क्या और क्या होता जा रहा है।

पॉवरफुल और पॉवरलेस दोनों तरह के आदमी बहुरूपियों को भी उन्नीस ठहराने लगे हैं। सत्ता की होलिकाओं की गोद में एकदम निर्भय बन बैठे उन लोगों के लिए कुर्सिया अभेद्य सुरक्षा कवच ही हो गई हैं, जिनमें धंसे रहकर वे जमाने पर कुछ भी

सितम ढाने के आदी हो गए हैं।

अपने अस्तित्व को पाने और फिर बरकरार रखने के लिए जब आदमी सारे नैतिक मूल्यों और आदर्शों को स्वाहा करते हुए आगे बढ़ने का भ्रम पाल लेता है, तब उसके लिए मनुष्य होने का बोध जगने का कभी प्रश्न ही पैदा नहीं होता।

अपने आस- पास नज़र घुमाएं तो दिखेगा कि लोग कितनी दोहरी- तिहरी या बहुरूपिया जिन्दगी जीते हैं। उच्चाकांक्षाओं के फरेबों से भरे फेर में लगातार मानवीय मूल्यों को रौंदते हुए आगे बढ़ते हुए दिखने वाले इन लोगों के लिए भ्रम में जीना और भ्रम फैलाते हुए आगे निकल जाना ही एकमेव जीवन लक्ष्य है।

इन लोगों के हर कर्म और व्यवहार में साफ झलकता है दिखावा। कहते कुछ हैं, करते कुछ और, होता है कुछ और है। षड़यंत्रों और फरेब की बुनियाद पर टिके इन लोगों की सारी खिड़कियां और दरवाजे अन्दर की ओर ही खुलते हैं।

इन्हें कोई सरोकार नहीं जमाने की प्रतिक्रियाओं या परिवेश पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों का। कुर्सी की होलिकाओं के फायर प्रूफआवरण ने इन्हें इतना निर्भय बना दिया है कि इनके लिए कुछ भी करना अस्पृश्य नहीं है। जो जिस रंग के लिबास में बैठा है, उस रंग की वाह- वाह करते हुए जनमानस को भ्रमित करता हुआ अपन उल्लू सीधा कर रहा है। जनता की आह कराह की उसे फिक्र है ही कहां।

अब बहुत हो चुका है। होलिकाओं को दिया वरदान क्षीण होने लगा है, प्रह्लाद की पुकार अब ताकत पाने लगी है, हर कोने- कोने से आहट आनी शुरू हो गई है, हिरण्यकश्यपों को चेत जाना चाहिए, वरना अब समय करीब आ गया है, कितना कुछ हजम कर चुकने के बाद भी डकार तक नहीं लेने वाला उनका पेट अब ज्यादा दिन सुरक्षित नहीं है, जनशक्ति के रूप में हौले- हौले बढ़ चला है कोई उनकी तरफ।

प्रकृति भी अब अपनी पर उतर आई है। वह भी अब समझाती नहीं, सबक देने लगी है। लद गया वह जमाना, जब सब कुछ चल जाता था, चला दिया जाता था। अब दुनिया करवट ले रही है। महापरिवर्तन का आगाज हो चुका है। सब तरफ धरती हिलने लगी है, कुछ नया और सुनहरा सुकूनदायी मंजर दिखाने के लिए। जो हो रहा है उसे दिल थाम कर द्रष्टा भाव से देखते जाइए।

tarkas

मैं शहंशाह ए आलम हूं

होली है, होली है, होली है..., घर से बाहर आवाज़ सुनाई दी, तो उनको दरवाज़ा खोलना पड़ा। देखते ही सभी लोग चौकीदार जी बधाई हो, आपको शुभकामाएं, अगला चौकीदार भी आप ही को बनाया जाए। लगा मानो होली का मज़ाक करने आए हैं। रंग लगाने की ज़रूरत नहीं रही, उनके चेहरे पर पल भर में कितने रंग आते जाते नज़र आने लगे। उनका संयम टूटने लगा और बोले बस बहुत हुआ चौकीदार अबकी बार मुझ शहंशाह की ही सरकार, पहला सेवक न कोई चौकीदार और न ही कोई झूठा किरदार। अब तो समझो मुझको यार देश की बागडोर है या होली का त्यौहार। ये क्या हुआ कैसे हुआ, कब हुआ, क्यों हुआ, जब हुआ, हुआ तब हुआ को छोड़ो। भंग का असर तो नहीं कोई नहीं समझ पाया, लगा मामला संगीन है। पिचकारी का रंग बेरंग पानी होकर धरती पर बिखर गया। ऐसे में जानकार मीडिया वाले को सूझा हल तो उसने जयघोष कर दिया। शहंशाह ए आलम की जय हो, आपका इकबाल बुलंद हो, आपको होली मुबारिक हो। सबने दोहराया तो जनाब को भी चैन आया। शहंशाह का दीवान सजाया गया और तख्त ताज से सुशोभित नेता जी आसन पर बैठ सबको बैठने का इशारा किया।

शहंशाह कहने लगे मेरे दिल की बात आप सभी जानते ही हैं हमेशा से। जुबान फिसल गई थी, जब खुद को पहला सेवक और बाद में चौकीदार घोषित कर दिया। कहने से कोई कुछ बन नहीं जाता है मन की बात कोई नहीं समझता, मन की बात मन में रहती है, लबों पर आती नहीं है। अब सोचा कि अभी नहीं तो कभी नहीं और दिल की घबराहट को काबू कर सत्ता की देवी सुंदरता की मिसाल कुर्सी को जन्म जन्म तक बंधन में बांधने की बात कह दी है। तुम बिन जीवन कैसा जीवन।

अभी किसी नेता ने ब्यान दिया है, इस बार मुझे वरमाला पहनाई तो फिर देश में कोई चुनाव नहीं होगा। अच्छा लगा सुनकर कोई मेरे दिल की बात, बिना कहे समझता है। आप मुझे गलत नहीं समझना मुझे कोई लालच कोई मोह सत्ता का नहीं है, मगर मेरी बात आप सब जानते हैं मुझसे अच्छा कोई न कभी हुआ न कोई कभी हो सकता है कभी भी। मगर इस देश की भोली जनता को कोई भी बहला सकता है। कमसिन गोरी की तरह और लूट सकता है। उनकी लूट, लूट होती है, मैं जो भी करूं मेरी मर्ज़ी, मेरा अधिकार और देशभक्ति जनता की भलाई है। अब बार बार ये रिस्क उठाना उचित नहीं है। इसलिए जैसे आपातकाल में संविधान को बदला संसद का कार्यकाल बढ़ा दिया था। उसी तरह इस संसद का कार्यकाल अनंतकाल तक बढ़ाने की ज़रूरत है। कितने चुनाव हुए मगर बदला क्या केवल नाम, बदलते रहे सांपनाथ नागनाथ। फिर इतना समय इतना धन और साधन खर्च करना किस काम का।

संविधान बना क्या था, उसके बनाने का उद्देश्य क्या था, कोई सोचता नहीं, समझता नहीं। जैसे गीता रामायण पढ़ने को नहीं, शीश झुकाने को रह गए हैं। संविधान सत्ता पाने के बाद शपथ उठाकर भूल जाने को रह गया है। सत्ता पाने के बाद सब संविधान को दरकिनार कर मनमानी करते हैं। ये आडंबर बंद होना चाहिए। जब हर दल और नेता चुनाव जीतने के बाद खुद को जनता का सेवक समझता नहीं और शासक बनकर मालिक की तरह आदेश देता है। फिर बेकार दिखावे के देशसेवा के दावे करने का मतलब क्या है। जब नाचन लागी तो घूंघट काहे। बस अब सेवक चौकीदार का तमगा उतार जो है असली चेहरा सामने दिखाना है। बस बहुत खेली होली देश की जनता और देश की व्यवस्था संग और संविधान की पालना की झूठी रट लगाना।

हम तो आज़ादी से पहले से जानते हैं, इस देश को लोकशाही नहीं राजाओं की गुलामी ही मिलनी उचित है। विदेशी शासक या देश के काले अंग्रेज बात एक जैसी है। चार साल कितने चिंतामुक्त रहे हैं हम और कब कुछ महीने बाकी रह गए। सत्ता पर रहने को पलक झपकते समय बीत गया। बार बार जीत हार का डर कब तक सहना है कठोर निर्णय लेना पड़ता है। अगर होली पर नहीं तो दस दिन बाद पहली अप्रैल पर सही। दस दिन हैं विचार करने को चुनावी खेल को रोकने को बहाने बहुत हैं। काठ की हांडी बार बार चढ़ती नहीं है और लोग झूठे वादों को समझने लगे हैं। अन्य सभी बातों को छोड़ इक ज़रूरी ऐलान करना है, होली पार अपनी गलतियों की भूल की माफी मांगने की परंपरा रही है। जिन पहले सत्ताधारी नेताओं को भला बुरा कहने की गलती करते रहे उनकी आत्माओं से माफी मांगनी है, उनको बताना है, मेरे मन में उनके लिए गांधीजी की ही तरह से आदर है। वास्तविकता भी यही है, आपको भी समझना होगा, मेरी राह इंदिरा गांधी की राह से अलग कदापि नहीं है। उनकी जीवनी से बहुत सीखा है और सीखना भी बाक़ी है। कोई नहीं जानता आज जो व्याख्यान सुना क्या उसे होली की मस्ती समझना चाहिए या कोई खतरा भविष्य में देश पर मंडरा रहा है।

कल शायद कहने वाला भी भूल जाएगा, नशे के आलम में मदहोशी में जो कहा, उसका अर्थ और सुनने वाले भी कोई सपना देखा हो यही सोच खामोश रहना उचित समझेंगे।

डॉ. लोक सेतिया
मॉडल टाउन, फतेहाबाद, हरियाणा
मो. 9416792330

राजसमंदीया होली

मेवाड़वासियों में खासी फेमस है 'राजसमंदीया होली'। पिछले साल होली के दिनों में ही हमारी नई भोजाई के स्वागत में नगरपरिषद के पक्ष-विपक्ष के पार्षदों ने कपड़ा-फाड़ होली खेलकर जो समा बांधा था, तोबा-तोबा ! वाकई ऐसा आनंद कभी नहीं आया था। खैर, मुई होली हर साल आ जाती है। होली के दिन हो और मसखरी ना हो तो होली का कायेका मजा। हमने एक टटपुंजीया नेताजी को पूछ लिया- भाई, राजसमंद का विकास काहे नहीं हो रहा है... नेताजी कहिन भाई विकास तो धरातल पर होता है। राजसमंद जिला तो झील पर बना है, आप ही बताओ पानी पर रेलवे स्टेशन कैसे बनाएं... आपको पता नहीं, जब ही तो सार महकमे इधर-उधर भेजने पड़ रहें हैं। ये सत्य वचन सुनकर हमारे पैरों तले से जमीन खिसक गई, जिसका पट्टा अभी जारी करवाया था। लगे हाथ हमने दूसरे नेताजी से ही पूछ लिया... भाई राजसमंद झील को भरने वाली खारी फिडर का क्या हुआ तो बड़े शाही अंदाज में बोलें कृपा.. तो जारी हो गई है, पता नहीं कहां अटक गई है, पूजा- पाठ करेंगे तो पांच दस साल बाद आ जाएगी। खैर चुनावी सभाओं में ताल ठोक कर काम गिनाए जाएंगे जो कागजों में हुए उसे भी बताएं जाएंगे, मानाकि वो धरातल पर नहीं पाए जाएंगे।

भाई होली भी जनतंत्रीय त्यौहार है, कोई हाथ से गुलाल मले तो बुरा मत मानना कोई, गुलाब का फूल दे जाए तो अप्रैल का फूल मत होना और कोई हमारी तुम्हारी किस्मत पर फेर दें झाड़ू, तो आप नाराज़ मत होना। होली रंगों का पर्व है, इस होली पर छह पंक्तियां जरुर पसंद आएगी-

होली खेलेंगे राजसमंद जिले के संग
वादों की पिलाएंगे हर एक को भंग
पांच साल तक चढ़ी रहें सबको तरंग
विकास के नाम की बजे की चुनावी चंग
तू रेल मांगेगा तो हवाई अड्डा दिलाएंगे
तू कोट मांगेगा तो हाईकोर्ट दिलाएंगे
तू खारी फिडर क्या बात करता है बंदे
हम हरिद्वार से गंगा नदी लाएंगे

होली है भाई, होली है बुरा न मानों होली है, चुनावी राजनीति में घुली भंग की गोली है।

चन्द्र शेखर आजाद
नाथद्वारा, राजसमंद
मो. 9461670670

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

यही है जिन्दगी

आज मोती उदास है, अवाक है और संभ्रम में है। समझ नहीं पा रहा, जिस अल सुबह उसके मालिक घर की खिड़की जो सड़क की ओर खुलती है, पर उसे गोद में लेकर बैठते थे और गरम-गरम मीठे-मीठे दूध में डालमिया के बिस्किट डुबो-डुबोकर मनुहार से खिलाया करते थे, आज सूरज की किरणें आंगन में उतरने से पहले ही उसे बड़ी बेरुखी, बेहयाई और छि! कुछ कह नहीं पा रहा है मोती, बदतमीजी से उसके गले की चैन उतारकर सामने सड़क पर छोड़कर बेरहमी से भीतर चले गये हैं।

मोती ने कुछ समझा, कुछ देखा पर जो भी अभी-अभी गुजरा, को एक हल्की सी एक झटक से फड़-फड़ाकर भूलने की कोशिश करने लगा। योग मुद्रा में उसने अंगड़ाई ले आसमान की ओर निहारा। उड़ते पंछी, सरसर बहती हवा और धरती पर उतरते, दौड़ते, भागते मिट्ठू, चिड़ियाओं और गिलहरियों को देख उसे जैसे कैद से बाहर आ सांस लेने का एहसास होने लगा।

अचानक ऊपर खिड़की से मालकिन जिन्हें सभी आदर से आंटीजी कहते हैं, ने कल रात की ठंडी रोटियां और बासी दाल इस एंगल से फैंकी कि वे मोती को ऊपर से नीचे तर कर गई। उसे कुछ अच्छा नहीं लगा.उसे गरम गरम मीठे मीठे दूध में डूबे डालमिया बिस्किट की गंध नथुनों में आने लगी।

मालिक चाय पी रहे हैं। मोती की आदत मानापमान को ताक पर रख जो है सो हैप्पर आ गई। बासी रोटी खाते खाते उसके पैर बरबस कल तक के उसके आशियाने तक बढ़े ही थे कि आंटी जी ने जोर से ''दुर्र'' कहा और गेट भड़ाक से बंद कर लिए।

आंटी जी का यह व्यवहार उसकी समझ से परे था। हां, याद आया। दो तीन दिन से आंटी जी कहती सुनायी दे रही थीं। निकाल बाहर करो अणी नासपीटा ने। अतरो सो रूरक्यो हो, थां अणी नेपास री गली ऊं उठाई लाया हा। कतरो हूदो हो। थांका लाड़ प्यार मां लेण ऊं ई उतरी ग्यो। सड़क रा कूकरां रे हाथे रात दण भौंका भौंकी करे। राते खिड़की सूं झांक गलियां रा कुत्ता ऊं पंगा ले। नींद हराम वेगी म्हारी तो। बस, मेरी इस दुर्दशा का कारण यही है। सपने चूर चूर हो चुके थे। अब नीचे पथरीली जमीन और ऊपर खुला आसमान। मोती ने मानों परिस्थितियों से समझौता करने की ठान ली थी।

लेकिन सब कुछ इतना सीधा सपाट भी नहीं है मोती की जिन्दगी में।फ्रि गले का यह पट्टा।अतीत के सुखद बोध से मोती कितना ही इतराये, गली के कुत्ते इसे वर्ग भेद की दीवार मान इसे तार-तार करने के लिए टूट पड़े।

चहुंओर घिरे मोती के अपमान की यह पराकाष्ठा ही तो थी। बेदखल हुए मोती पर न जाने कितने कुत्ते किस किसके आह्वान पर अपनी अपनी दुश्मनी निकालने के लिये उग्र आवाज़ में संवाद कर रहे

थे। मोती की अभिजातता की निशानी गले का पट्टा, लेकिन उसे खोले कौन? मोती की तबीयत दुरस्त कर उसके र ईसाना अतीत की चिंदियां उड़ाने के बाद शायद कोई अलिखित समझौता हो गया था सबके बीच। लगा यह भी कि कुछ बुजुर्गवार कुत्ते अपने निरक्षर और असामाजिक व्यवहार से मनुष्य जगत में गुस्से का शिकार बनते जा रहे नवयुवा कुत्तों को मोती की एटिकेसी से लाभान्वित करना चाहते थे। निर्वासित और निष्कासित मोती के लिये उसका अपने मालिक के साथ का गत लंबे समय का सान्निध्य आज उसके अपने मूल समाज के साथ पुनर्वास का एक सशक्त कारण बन गया था।

अपने प्रातः कालीन भ्रमण के दौरान मैं आज एक नए अनुभव के साथ आश्चर्य चकित हूं। आज मोती बहुत सुबह उठकर कुछ अपने ही साथियों के साथ एरिये पर काबिज़ होने के लिए लामबंद नज़र आया। कल गले के जिस आधे अधूरे कसे हुए पट्टे के कारण वह अपनों ही के बीच अपमानित हुआ, आज वही पट्टा उन चंद साथियों को उसके करीब ले आया है जो उसके दुश्मन थे तब जब मोती मालिक की गोद में बैठा बिस्किट में डूबा दूध अरोगता था और नीचे गलियों की खाक छानते ये ही चंद ईर्ष्या की आग में झुलसे भौंक भौंक कर अपने हीनता बोध को छिपाने की कोशिश करते थे। मोती और उसके गले का पट्टा उनके अधूरे सपनों को पूरा कर सकता है, इसी उम्मीद पर जिन्दगी भर हड़काए जाते रहने की मजबूरी से मुक्ति पा लेने का वे विजय पर्व मना रहे थे।

और मोती... उसका एजेंडा मुख्यधारा में मिलना नहीं है। ऐसा होता तो गले का पट्टा अब तक ज्यों-त्यों खींचकर उतार दिया होता। यह तो गले में पहनाया वह हार है जो बिस्किट मालिक की जाने अनजाने सहज जानकर की गयी भूल है, शायद धन बल, सत्ता बल के वायरस का संक्रमण पट्टा और पट्टेदार की शक्ल में भटकते दिशाहीन भोले गलियों के कुत्तों तक पहुंच गया है। अब कैसे बताऊं, मोती उनकी भोली दिशाहीनता को अपनी नयी दुनियां में एक बड़ी सत्ता की तलाश में उपयोग करना चाहता है।

आज बहुत दिनों बाद सुबह की सेर को निकला हूं। पिछले आठ दस दिन से दिन रात शहर के गली मोहल्ले में कुत्तों का शोर बढ़ता ही जा रहा है। घर की बालकनी से दिन भर मोती का दौड़ना भागना और पीछे ढेरों मज़लूम, दारिद्रय दुः ख की विभीषिका झेलते अनुयायियों का झुंड। इस बीच मोती ने अनथक मेहनत कर अड़ोस पड़ौस में अपना स्थान बना लिया है। सुबह के खुशगंवार माहौल में मोती और उसके इर्द गिर्द उसके कुछ दिन पहले के दुः ख दर्द के साथी जो उसके साथ जुट खड़े हुए थे, आज उसकी सेना के उपनायक थे।

आज मोती के चेहरे पर गज़ब का नूर है, कन्फिडेंस है। क्यों न हो? उसने एक युद्ध जीता है। इन्सान के द्वारा चोट खाकर भी एक बात उसने अपने भूतपूर्व मालिक से सीखी है। अपने अस्तित्व के लिये दुनियां की हर अच्छी बुरी चीज़ का उपयोग करने की।

मोती ने घमंड से पीछे घूम अपने विशाल अनुयायी समाज को देखा। वे सब भी उसके उपयोग, उपभोग की चीजें ही तो हैं। मोती आसमान की ओर सिर उठा अपनी भाषा में शायद कोई संदेश दे रहा है। मुझे उसकी भौं-भौं में यूज एंड थ्रो सुनाई दे रहा है।

खिड़की पर बैठा मालिक चाय पी रहा है। नितांत अकेला, अमीरी का चोला तो उतर चुका है न मोतीएन बिस्किटएन पट्टा। उफ! यही है जिन्दगी।

डॉ. राकेश तैलंग
वरिष्ठ साहित्यकार
श्री द्वारकाधीश मंदिर मार्ग

श्री द्वारकाधीश मंदिर

राजसमन्द के बहुक्षेत्रीय पर्यटन पर एक दृष्टि

मेवाड़ के ख्यातिनाम तीर्थों में एक है, राजसमंद शहर के कांकरोली क्षेत्र में स्थित पुष्टिमार्गीय तृतीय पीठ के श्री द्वारकाधीश प्रभु का मन्दिर है।

यह मन्दिर मेवाड़ की उदयपुर रियासत के महाराणाओं का गुरुघर है। उदयपुर से उत्तर दिशा में लगभग पैंसठ किलोमीटर दूर अरावली पहाड़ियों की गोद में बसा यह नगर नाथद्वारा से लगभग 16 किलोमीटर दूर राष्ट्रीय राजमार्ग आठ पर सड़क मार्ग पर स्थित है। उदयपुर से मारवाड़ जंक्शन पर रेलमार्ग पर स्थित यह शहर अपने ब्रोडगेज आमान परिवर्तन की प्रतीक्षा में है। वर्तमान में कांकरोली राजसमन्द नगर परिषद् क्षेत्र का एक बड़ा हिस्सा है, जबकि राजनगर, धोइन्दा भी बड़े उपनगर हैं और इन समस्त से जुड़कर यह समस्त भूभाग राजसमन्द जिला मुख्यालय के रूप में पहचाना जा रहा है। यह विधानसभा और राजसमंद लोकसभा क्षेत्र के रूप में भी ख्यात है।

राजसमंद जैसा कि कहा गया है, पुष्टिमार्गीय तृतीय पीठ के नाम से रमणीक तीर्थ है। यहां विराजित प्रतिमा (स्वरूप) पौराणिक युग से विभिन्न सेवानुभावी जन द्वारा सेवित होता आ रहा है। सृष्टि की संरचना हेतु जब ब्रह्मा जी ने भगवत् स्वरूप का ध्यान किया, तब उन्हें सर्वत्र जलमग्न भूमि से तप तप की ध्वनि सुनाई दी। इसी ध्वनि को भगवदाज्ञा मान आपने एक हजार वर्ष तक तप किया और तब ब्रह्मा जी को चतुर्भुज स्वरूप में स्वयं भगवान् ने दर्शन दिए।

ऐसी मान्यता है कि वर्तमान में श्री द्वारकाधीश का यह वही स्वरूप है। तदनंतर्गत अपने पुत्र कर्दम ऋषि को आपने सृष्टि संरचना हेतु आज्ञा प्रदान की। कर्दम ऋषि के तप से प्रसन्न होकर उन्हें चतुर्भुज स्वरूप में दर्शन दिए। कालांतर में भगवदाज्ञानुसार कर्दम ऋषि ने स्वायंभुव मनु की पुत्री देवहूति से विवाह कर कपिल देव को जन्म दिया। यहां से विग्रह के रूप में यह स्वरूप बिंदु सरोवर में स्थापित हो कपिल मुनि द्वारा सेवित हुआ। इन्हीं के पुत्र देव शर्मा और उनके पुत्र विष्णु शर्मा द्वारा सेवित होता हुआ यह स्वरूप बिन्दु सरोवर से बाहर आ देव शर्मा के वंशजों में शेष रही वृद्ध महिला द्वारा पूजित हुआ। समय के लंबे अंतराल बाद द्वारकाधीश का स्वरूप राजा अंबरीष,

भारद्वाज, कश्यप, कन्नौजवासी नारायण दर्जी, दामोदर दास संभरवाल से सेवित होते हुए महाप्रभु वल्लभाचार्य तक पहुंचा और तत्पुत्र विट्ठलनाथ जी द्वारा सेवित हो इनके तृतीय पुत्र श्री बालकृष्ण जी द्वारा सेवित हुआ। कुछ सौ वर्ष बाद मुगल शासन में महाराणा राजसिंह जी द्वारा इसे मेवाड़ में ला आसोटिया, कांकरोली में स्थापित किया गया।

आगत पर्यटकों को प्रभु द्वारकाधीश की उक्त पौराणिक युग से इतिहास काल की इस यात्रा को जानने के बाद राजसमंद झील किनारे स्थित इस मंदिर के अवलोकन की प्रेरणा लेनी चाहिए। प्रभु के मेवाड़ आगमन के पश्चात् कांकरोली की पहाड़ी पर आमेट की हवेली के नाम से विख्यात स्थान पर महल और मंदिर के रूप में इस हवेली को विस्तार दिया गया। नवनिर्मित इस महल का नाम गिरिधरगढ़ के नाम से जाना गया।

यह गिरिधरगढ़ दो भागों में विभाजित है। तृतीय पीठ आचार्यों का आवास और प्रभु का मन्दिर, जिसे पुष्टिमार्गीय शब्दावली में नंदघर की संज्ञा दी गई है। एक सम्पन्न गृहस्थ परिवार में जैसा विस्तार होता है, वही यहां द्रष्टव्य है।

निज मन्दिर, कीर्तनिया पोल, कमल चौक, रतन चौक, गोवर्द्धन चौक महत्वपूर्ण स्थल हैं। इस मन्दिर में मुख्य विग्रह द्वारकाधीश जी के साथ मथुरेश जी और दाऊजी के मन्दिर भी दर्शनार्थ हैं। मंदिर की बैठक के नीचे तृतीय पीठ के आद्याचार्य श्री बालकृष्णजी की बैठक भावनाशील दर्शनार्थियों के लिए दर्शन स्थल है।

द्वारकाधीश प्रभु के दर्शन हेतु पधारें, तो फूलघर, पानघर, सागघर, समाधान, प्रसादी भंडार, खर्च भंडार पर भी एक दृष्टि अवश्य डालें। गोवर्द्धन चौक पर मंडप और अभी अभी निर्मित पुष्टि दर्शन कक्ष भी विविध आयोजनों के लिए सुन्दर स्थल हैं। मंडप की छत से जहां कांकरोली नगर का अवलोकन चित्ताकर्षक है, वहीं नगारखाना ठाकुर जी की राग सेवा का एक आकर्षक स्थल है। गोवर्द्धन चौक में विद्या विभाग, उच्च कोटि का ग्रंथालय है, जो शोध और सर्वे का भारत वर्ष में विशेष केन्द्र है।

मंदिर के सन्निकट विश्व प्रसिद्ध राजसमंद झील के दक्षिण भाग में जलघरा घाट वर्तमान में अपने सौन्दर्यीकरण की दिशा में गतिगामी है। प्रयास है कि शीघ्र हम इसे नैसर्गिक और सांस्कृतिक महत्व के स्थल के रूप में पाएंगे और गोमती नदी के जल में यमुना के पवित्र भाव का अनुभव करेंगे।

क्रमशः...

डॉ. राकेश तैलंग
वरिष्ठ साहित्यकार
द्वारकेश मार्ग, कांकरोली
मो. 9460252308

प्रेम क्या होता है

इधर सुनते हैं प्यार, इश्क़, मुहब्बत की बहार आई हुई है। कोई नया तरीका है ये प्यार करने का। फलां दिन फूल देना है। इस दिन चॉकलेट, उस दिन परपोज़ करना है और किस दिन इज़हार करना है। लगता है प्यार नहीं किया, कोई अनुबंध किया है बाकायदा तरीके से। कमी रह जाती है तो इतनी कि इसका कोई दस्तावेज़ नहीं लिखा जाता न कहीं उसको दर्ज ही किया जाता है, वर्ना इसको भी कारोबार ही कहते। सच कहता हूं ऐसे प्यार की बात में मैं किसी भी सच्चे प्यार करने वाले का नाम नहीं शामिल करना चाहता। अपमान होगा, उनका जिनका प्यार इक इबादत था, जुनून था, इक मिसाल था। नहीं सुना किसी सच्चे आशिक़ ने उसको बेवफा कहा हो, जिसको खुदा समझा और प्यार किया उससे। इधर तो कसमें वादे जाने क्या क्या करते हैं। इक शायर ने लिखा था इक नज़्म में, अपनी प्रेमिका को तू मुझे ठुकरा के जा भी सकती है, मेरे हाथ में तेरा हाथ है जंजीर नहीं। शायर उस प्यार को प्यार नहीं मानता जो उसी को अपनी गुलाम बनाकर रखना चाहता हो, उम्रभर को ही नहीं, मरने के बाद भी चाहता हो वो कब्र में भी मेरे साथ ही लेटी हो। कैसा प्यार है, जो किसी को पिंजरे में बंद करना चाहता है, इक बार पिंजरे में आया तो फिर उसको कोई आज़ादी नहीं बाहर जाने की। हैरानी की नहीं ये खेद की बात है कि हर तरफ लोग किसी की बेवफ़ाई की दुहाई देते फिरते हैं। अगर जानते क्या है प्यार तो खुद अपने प्यार को यूं रुसवा नहीं करते। वो प्यार प्यार है ही नहीं, जिसमें कोई शर्त हो, पाने की, प्यार खुद को समर्पित करना है, किसी को हासिल करना नहीं। अगर कोई किसी को सच्चा प्यार करता है, तो वो उसकी खुशी चाहेगा जिसको चाहता है, अपनी ख़ुशी, अपनी मर्ज़ी, अपना स्वार्थ तो प्यार नहीं। प्यार जान देने या जान लेने का नाम नहीं, प्यार है इक तड़प, इक बेकरारी जो कभी खत्म नहीं होती। प्यार रूहानियत की बात है जिस्म की बात तो इक इल्ज़ाम है प्यार पर इश्क़ पर। प्यार वो है जो बंदे को खुदा बना दे, जो इंसान को इंसान भी नहीं रहने दे वो और जो भी हो प्यार हर्गिज़ नहीं है।

होगा किसी संत का दिन वेलेनटाईन डे, मगर प्यार का ऐसा रूप तो उसने कभी नहीं सोचा होगा, जैसा आजकल दिखाई देता है। कोई बाज़ार है, कोई कारोबार है, कोई तमाशा है प्यार, ये क्या हो गया है तथाकथित प्रेमियों को। आडंबर नहीं होता है प्यार। चलो इक प्यार का गीत, फ़िल्मी ही सही, दोहराते हैं। किसी की मुस्कुराहटों पे हो निसार, किसी के वास्ते हो तेरे दिल में प्यार, जीना इसी का नाम है।

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

पूर्व प्रधानमंत्री की सच्ची कहानी, कर देगी हैरान

94 साल के एक बूढ़े व्यक्ति को मकान मालिक ने किराया न दे पाने पर किराए के मकान से निकाल दिया। बूढ़े के पास एक पुराना बिस्तर, कुछ एल्युमीनियम के बर्तन, एक प्लास्टिक की बाल्टी और एक मग आदि के अलावा शायद ही कोई सामान था। बूढ़े ने मालिक से किराया देने के लिए कुछ समय देने का अनुरोध किया। पड़ोसियों को भी बूढ़े आदमी पर दया आई और उन्होंने मकान मालिक को किराए का भुगतान करने के लिए कुछ समय देने के लिए मना लिया। मकान मालिक ने अनिच्छा से ही उसे किराया देने के लिए कुछ समय दिया। बूढ़ा व्यक्ति अपना सामान अंदर ले गया।

तभी रास्ते से गुजर रहे एक पत्रकार ने रुक कर यह सारा नजारा देखा। उसने सोचा कि यह मामला उसके समाचार पत्र में प्रकाशित करने के लिए उपयोगी होगा। उसने एक शीर्षक भी सोच लिया, मकान मालिक बूढ़े को पैसे के लिए किराए के घर से बाहर निकाल देता है... साथ ही उसने बूढ़े किराएदार और किराए के घर की कुछ तस्वीरें भी ले लीं।

पत्रकार ने जाकर अपने प्रेस मालिक को इस घटना के बारे में बताया। प्रेस के मालिक ने तस्वीरों को देखा और हैरान रह गए। उन्होंने पत्रकार से पूछा कि क्या वह उस बूढ़े आदमी को जानता है, पत्रकार ने कहा, नहीं।

अगले दिन अखबार के पहले पन्ने पर बड़ी खबर छपी। शीर्षक था, भारत के पूर्व प्रधानमंत्री गुलजारीलाल नंदा एक दयनीय जीवन जी रहे हैं। खबर में आगे लिखा था कि कैसे पूर्व प्रधानमंत्री किराया नहीं दे पा रहे थे और कैसे उन्हें घर से बाहर निकाल दिया गया था। टिप्पणी की थी कि आजकल फ्रेशर भी खूब पैसा कमा लेते हैं। जबकि एक व्यक्ति जो दो बार पूर्व प्रधानमंत्री रह चुका है और लंबे समय तक केंद्रीय मंत्री भी रहा है, उसके पास अपना खुद का घर भी नहीं।

दरअसल गुलजारीलाल नंदा को स्वतंत्रता सेनानी होने से 500 रुपए प्रतिमाह भत्ता मिलता था। लेकिन उन्होंने यह भत्ता भी एक बार अस्वीकार कर दिया था और कहा था कि उन्होंने स्वतंत्रता सेनानी के भत्ते के लिए लड़ाई नहीं लड़ी। बाद में दोस्तों ने उसे यह स्वीकार करने के लिए विवश कर दिया कि उनके पास आय उत्पन्न का अन्य कोई स्रोत नहीं है। फिर इसी पैसों से वह अपना किराया देकर गुजारा करते थे।

अगले दिन वर्तमान प्रधानमंत्री ने मंत्रियों और अधिकारियों को वाहनों के बेड़े के साथ उनके घर भेजा। इतने वीआइपी वाहनों के बेड़े को देखकर मकान मालिक दंग रह गया। तब जाकर उसे पता चला कि उसका किराएदार पूर्व प्रधानमंत्री गुलजारीलाल नंदा है। मकान मालिक अपने दुर्व्यवहार के लिए तुरंत गुलजारीलाल नंदा के चरणों पर झुक गया। अधिकारियों और वीआईपीयों ने गुलजारीलाल नंदा से सरकारी आवास और अन्य सुविधा को स्वीकार करने का अनुरोध किया। गुलजारीलाल नंदा ने इस बुढ़ापे में ऐसी सुविधाओं का क्या काम, यह कह कर उनके प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया। अंतिम श्वास तक वे एक सामान्य नागरिक की तरह, एक सच्चे समर्पित देशभक्त बनकर ही रहे थे। 1997 में सरकार ने उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया।

उल्लेखनीय है कि गुलजारीलाल 1964 में जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु के बाद दूसरे प्रधानमंत्री बने और 1966 में लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु के बाद फिर प्रधानमंत्री के रूप में कार्य किया। उनके दोनों ही कार्यकाल बेहद संक्षिप्त थे। 1921 में मुंबई में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर थे। 1932 में सत्याग्रह के दौरान उन्हें जेल में डाल दिया गया था।

उनके जीवन की तुलना वर्तमान के राजनेताओं से करें।

संकलनकर्ता :
विजय शर्मा 'मेवाड़ी'
खबरां मेवाड़ी,
राजसमंद

व्यंग्य

दुनिया बनाने वाला ही हैरान- परेशान

कुछ बात ऐसी हुई कि ऊपरवाला खुद अपने निवास स्थान को छोड़ नीचे धरती पर चला आया। सोचा था शायद वहीं चैन सुकून मिला तो वापस आसमान की तरफ भूले से भी देखना नहीं। धरती पर आकर देखा तो दुनिया बदल चुकी थी, जैसी उसने बनाई और जिस भविष्य की कल्पना कर धारणा बनाकर छोड़ दिया था दुनिया को। खूबसूरत से भी बढ़कर शानदार सभी के जीने खुशी से रहने को तमाम चीज़ें उपलब्ध करवा कर उसका कोई वजूद ही नहीं था। उसने कभी ऐसी दुनिया बनाने की चाहत नहीं की थी, ये कोई और किसी शैतान की बनाई दुनिया लगती है। घूमते फिरते अजनबी लोगों से पूछता रहा, ये कौनसी दुनिया है, किसने बनाया है ये सब, तबाही का मंज़र दिखाई देता है, कोई भी यहां जितना भी हासिल है उसको पाकर संतुष्ट नहीं है। चलते चलते कितने बड़े बड़े महल जैसे मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे, गिरजाघर, कितने धर्मों के धार्मिक स्थल नज़र आए, काफी तहकीक़ात के बाद पता चला ईश्वर, अल्लाह, वाहेगुरु रहते हैं उन जगहों पर। देवी देवता, पीर पय्यमबर फ़रिश्ते, मसीहा, संत साधु, उपदेशक असंख्य नाम वाले गली- गली, शहर- शहर, बस्ती- बस्ती, गांव- गांव विराजमान हैं, जिनकी आराधना, पूजा, ईबादत, आरती, महिमा का गुणगान होता है। धन दौलत चढ़ावा, तरह तरह के व्यंजन उनको भोग लगाए जाते हैं, हीरे जवाहरात, सोना- चांदी के ज़ेवरात पहनाए जाते हैं। खुदा को, अल्लाह को बंदे मनाए जाते हैं। किस बात से खफा हुआ दुनिया का मालिक, कोई नहीं जानता, भजन- आरती, अरदास क्या- क्या नहीं, जिसको रोज़ सुबह शाम दोहराए जाते हैं। इक पहेली है विधाता, ईश्वर, खुदा कितने नाम हैं, सभी सुलझाने की बात नहीं करते, उलझन को बढ़ाए जाते हैं। इक दुनिया बनाने वाले के अनगिनत तस्वीरें, क्या क्या नहीं बनाकर बाज़ार में सिक्का जमाए मुनाफा कमाए कारोबार चलाए जाते हैं। किसी कंपनी की तरह शाखाएं खोलते जाते हैं, ख़रीददार को जो मांगोगे, मिलेगा की तरह झांसा देकर उल्लू बनाए जाते हैं।

आखिर उपरवाले को अहसास हुआ कि दुनिया को बनाकर उसे अपने हाल पर छोड़ आज़ादी से सबको मनमानी करने की छूट देना बड़ी गलती थी और उसको खुद हर दिन पल पल संभालना भी उसका दायित्व था। कुछ सहायकों को देखभाल करने को नियुक्त करने से सब सुचारू ढंग से नहीं चल सकता था। बहुत सोचने, चिंतन करने के बाद विधाता ने निर्णय लिया, जब तक तमाम समस्याओं को समझ नहीं लेते और समाधान नहीं खोज लेते, उस आकाशलोक में नहीं लौटना है। बहुत दिन से दुनिया का मालिक फुटपाथ पर रह रहा है। उधर ऊपर जब मालिक बहुत समय तक दिखाई नहीं दिए, तो उस लोक में सबको चिंता होने लगी, ढूंढते ढूंढते थक गए सभी, तब राज़ खुला, किसी ने कटाक्ष किया था मालूम भी है जिस दुनिया को बनाया था किस हाल में है।

भारत देश के लोकतंत्र की तरह सिंघासन पर विराजमान शासक, अधिकारी सोचते हैं सब बढ़िया है, शानदार है, क्योंकि सरकारी आंकड़े योजनाएं सभी दिखलाते हैं चारों तरफ हरियाली है, फूल ही फूल खिले हैं। भूख, गरीबी, बदहाली, अन्याय, अपराध, भेदभाव, जनता की समस्याएं कब की मिटाई जा चुकी हैं, उन फाइलों को दीमक चाट गई है और अधिकारी, कर्मचारी सरकारी अनाज के गोदामों को पेट भरकर खाते- खाते मस्ती में झूमते रहते हैं। देश का सारा धन दौलत, साधन पांच फीसदी अमीरों का है, बाकी को कुछ नहीं मिला और उनको समझाया गया है कि ये उनकी फूटी किस्मत है, बदनसीबी है। सरकार समाज का कोई दोष नहीं है। दुनिया बनाने वाले ने सबको एक समान देने का प्रावधान नहीं किया है, तभी जिसकी लाठी उसकी भैंस का शासन कायम है। मुश्किल अजीब है ऊपरवाला अपनी बनाई दुनिया को देख कर दंग है और जिनको बनाया था वो बंदे उसको पहचानते नहीं, मानते ही नहीं, खुद ईश्वर धरती पर आया है, अपने आप बगैर किसी कर्मकांड आयोजन किए।

ऊपरवाले को खोजते खोजते उस लोकवासी धरती पर पहुंचे और बदली दुनिया के हालात उसके आधुनिक अंदाज़ को देख समझ कर विधाता को मनाने लगे, ज़िद छोड़ अपनी आसमानी दुनिया को लौट चलें। बस अब बहुत देर कर दी, तुमने दुनिया को बनाकर सुध बुध नहीं ली। अब सबने अपने- अपने भगवान, खुदा, देवी देवता बना लिए हैं। दुनिया को उनके खुद के बनाए नकली भगवानों के रहमो करम पर छोड़ कोई और नई असली दुनिया बनाओ। ये सब मानते भी हैं कि असली दुनिया कहीं कोई और है। लेकिन ऊपरवाला नहीं माना, उससे अब कोई नई दुनिया बन ही नहीं सकती। अपनी गलती की सज़ा झेलनी पड़ेगी, उसको फुटपाथ पर रहना होगा, प्रायश्चित करने को।

टीवी पर देखा कोई फ़िल्मी अदाकारा को आरती कर रहे थे, कोई किसी शातिर अपराधी को मन की बात समझने वाला समझ उसके पांव पकड़े थे, कोई किसी राजनेता की तस्वीर के सामने सर झुकाए खड़े थे, कितने लोग अपना भगवान खुदा, कितनी बार बदल रहे थे। दुनिया असली कैसे रहती, जब दुनिया वालों ने अपनी पसंद से सहूलियत को देख ईश्वर नकली बनाकर उनकी भक्ति शुरू कर दी है।

डॉ. लोक सेतिया
वरिष्ठ व्यंग्यकार
मॉडल टाउन फतेहाबाद, हरियाणा
मो. 9416792330

सन-शाईन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
RKCL
का अधिकृत ज्ञान केन्द्र
Tally, DTP, PGDCA
प्रवेश प्रारम्भ
पुराना बस स्टैंड, ICICI बैंक के पास, केलवा
मो. 9649813798, 9950084705
फेक्ट्री चौराया, बस स्टैंड गांवगुड़ा मो. 9024034696

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : 9672980901

पुस्तक समीक्षा

गीत रजनीगंधा के गाते हैं डॉ. द्वारकाप्रसाद सांचीहर

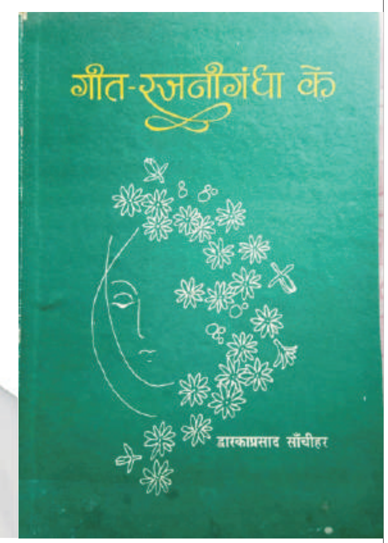

द्वारकाधीश प्रभु की नगरी में जन्में डॉ. द्वारकाप्रसाद सांचीहर की प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा कांकरोली में हुई और महाविद्यालय शिक्षा अहमदाबाद में हुई, वहीं अहमदाबाद के महिला कॉलेज में आप हिन्दी के प्रोफेसर पद पर कार्यरत हो गए। साहित्य के प्रति आपकी रूचि बचपन से ही थी। अतः वे गद्य और पद्य दोनों ही विधाओं में अहमदाबाद में ही कई पत्र पत्रिकाओं में अपनी रचनाओं की छटा बिखेरने लगे। कई नामी गिरामी संस्थाओं में भी आपका सम्मान होने लगा और आपने अपनी पुस्तकों का प्रकाशन शुरू कर दिया। आपकी अब तक 8 पुस्तकें विभिन्न विधाओं में प्रकाशित हो चुकी है। आज हम आपकी गीतों की प्रकाशित पुस्तक 'गीत रजनीगंधा के' बारे में बताने जा रहे है। अपनी पुस्तक गीत रजनी गंधा के अंदर अपनी बात में वे एक जगह कहते हैं अनुभुति की ईमानदारी ही मेरे गीतों की भाव सम्पदा है। मुझमें मेवाड़ के स्वर्ग कांकरोली की कुमकुम रोली का संस्पर्ष है और गुजरात के हृदय अहमदाबाद की चहलकदमी का ध्वन्यात्मक बिम्ब भी है।

'गीत शिला पर एक और हस्ताक्षर' भारत के सुमधुर गीतकार श्री सोम ठाकुर ने पुस्तक की भूमिका में द्वारकाप्रसाद सांचीहर के गीतों की परिबंधता पर संतोष जताते हुए एक जगह लिखा है- सांचीहर राग भाव के रचनाकार है गीत रजनीगंधा के गीत इसी भाव भूमि से निससृत हुए हैं। इस पुस्तक में 65 गीत है, जो विभिन्न आयामों के दृश्य प्रस्तुत करते हैं-

आंसु ही आंसु है जीवन पर्यन्त।
पतझड़ ही पतझड़ है, दूर है बसंत।।

इस गीत में कवि का मन व्यथित हो अपने मन के भावों की अभिव्यक्ति सुन्दर ढ़ंग से प्रस्तुत करता है, तो

आज अधूरा गीत सुनाकर मत जाओ,
पूरा गीत सुनु तो मन की तपन मीटे।

यह गीत भी किसी को आदेश देने वाला नहीं, किसी से कुछ पाने की आस रखने वाला गीत है, जो सुन्दर बन पड़ा है। कुछ कविताओं में-

चांदनी प्यारी क्यों तुम आज
व्योम से उतर रही चुपचाप।

और राग तुम हो, रागनी मैं तुम सुनाओं, मैं सुनाऊं

दोनों ही गीत मन को भाने वाले बन पड़े है। लय, ताल और मधुरता से गाये जाए तो इन गीतों का प्रभाव कई गुना ज्यादा हो जाता है। 'दर्द का इतिहास' गीत पढ़कर मन न जाने कहां- कहां दौड़ने लगता है, तो ''लहरो का दर्पण'' व 'मैं अन्जान रहा' गीत अभिभूत करते हैं, तो दूसरी ओर

दूधमुहें बच्चे सारोता मन का एक सपन।
आजादी की लाश मांगती फुलों बुना कफन।।

'आजादी की लाश', गीत शरीर में एक सिरहन सी पैदा करने वाला गीत है। उधर कवि एक गीत में कहता है-

हर चादर मैली क्यों ? प्यार एक पहेली क्यों ?
मौत की डगर पर ये, जिन्दगी अकेली क्यों ?

क्यों ? गीत मन को झकजोर देने वाला है। इस गीत में कवि ने जिन्दगी के हर पहलु को एक प्रश्नवाचक बनाकर प्रस्तुत किया है। कुछ गीतों की पंक्तियां कुछ इस तरह है-

फैल गई काई सिकुड़ गई गंगा।
सूरज की धूप में घाट घाट नंगा।।
जब तेरी याद चली आती है।
खिड़की से धूप चली जाती है।।
रंगों की रंगत में ना पड़ो।
खुशबू का खजाना खोलो तो
दो बोल प्यार के बोलो तो

ऐसे कई गीत मन को भाने वाले मन को झकजोरने वाले और आनंदित करने वाले हैं, जिनका आनंद तो पुस्तक गीत रजनी गंधा को पढ़कर ही लिया जा सकता है। भाई डॉ. द्वारकाप्रसाद सांचीहर को गीतों की इस अच्छी पुस्तक के लिए ढेरों बधाईयां। आशा है इस पुस्तक का साहित्य जगत में उचित मूल्यांकन होगा।

अफ़ज़ल खां अफ़ज़ल
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की, राजसमंद

नाक से निकलने वाली सांस तय करती है भविष्य

स्वर विज्ञान अपने आप में दुनिया का महानतम ज्योतिष विज्ञान है, जिसके संकेत कभी गलत नहीं जाते। शरीर की मानसिक और शारीरिक क्रियाओं से लेकर देवीय सम्पर्कों और परिवेशीय घटनाओं तक को प्रभावित करने की क्षमता रखने वाला स्वर विज्ञान दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण है।

स्वर विज्ञान का सहारा लेकर आप जीवन को नई दिशा- दृष्टि दे सकते हैं, दिव्य जीवन का निर्माण कर सकते हैं, लौकिक एवं पारलौकिक यात्रा को सफल बना सकते हैं। यही नहीं, आप अपने सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति और क्षेत्र की धाराओं तक को बदल सकने का सामर्थ्य पा जाते हैं।

अपनी नाक के दो छिद्र होते हैं। इनमें से सामान्य अवस्था में एक ही छिद्र से हवा का आवागमन होता रहता है। कभी दायां तो कभी बायां। जिस समय स्वर बदलता है, उस समय कुछ सैकण्ड के लिए दोनों नाक में हवा निकलती प्रतीत होती है। इसके अलावा कभी- कभी सुषुम्ना नाड़ी के चलते समय दोनों नासिक छिद्रों से हवा निकलती है। दोनों तरफ सांस निकलने का समय योगियों के लिए योग मार्ग में प्रवेश करने का समय होता है।

बांयी तरफ सांस आवागमन का मतलब है, आपके शरीर की इड़ा नाड़ी में वायु प्रवाह है। इसके विपरीत दायी नाड़ी पिंगला है। दोनों के मध्य सुषुम्ना नाड़ी का स्वर प्रवाह होता है।

अपनी नाक से निकलने वाली सांस को परखने मात्र से आप जीवन के कई कार्यों को बेहतर बना सकते हैं। सांस का संबंध तिथियों और वारों से जोड़कर इसे और अधिक आसान बना दिया गया है।

जिस तिथि को जो सांस होना चाहिए, वही यदि होगा, तो आपका दिन अच्छा जाएगा। इसके विपरीत होने पर आपका दिन बिगड़ा ही रहेगा। इसलिए सांस पर ध्यान दें और जीवन विकास की यात्रा को गति दें। मंगल, शनि और रवि का संबंध सूर्य स्वर से है, जबकि शेष का संबंध चन्द्र स्वर से। आपके दांये नथुने से निकलने वाली सांस पिंगला है। इस स्वर को सूर्य स्वर कहा जाता है। यह गरम होती है, जबकि बांयी ओर से निकलने वाले स्वर को इड़ा नाड़ी का स्वर कहा जाता है। इसका संबंध चन्द्र से है और यह स्वर ठण्डा है।

शुक्ल पक्ष

प्रतिपदा, द्वितीया व तृतीया : बांया (उल्टा)
चतुर्थी, पंचमी एवं षष्ठी : दांया (सीधा)

कृष्ण पक्ष

प्रतिपदा, द्वितीया व तृतीया : दांया (सीधा)
चतुर्थी, पंचमी एवं षष्ठी : बांया (उल्टा)
सप्तमी, अष्टमी एवं नवमी : दांया(सीधा)
दशमी, एकादशी एवं द्वादशी : बांया (उल्टा)
त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावास्या : दांया (सीधा)

नोट :

1. सवेरे नींद से जगते ही नासिका से स्वर देखें। जिस तिथि को जो स्वर होना चाहिए, वह हो तो बिस्तर पर उठकर स्वर वाले नासिका छिद्र की तरफ के हाथ की हथेली का चुम्बन ले लें और उसी दि शा में मुंह पर हाथ फिरा लें।
2. यदि बांए स्वर का दिन हो तो बिस्तर से उतरते समय बांया पैर जमीन पर रखकर नीचे उतरें, फिर दायां पैर बांये से मिला लें और इसके बाद दुबारा बांया पैर आगे निकल कर आगे बढ़ लें।
3. यदि दांये स्वर का दिन हो और दांया स्वर ही निकल रहा हो तो बिस्तर पर उठकर दांयी हथेली का चुम्बन ले लें और फिर बिस्तर से जमीन पर पैर रखते समय पर पहले दांया पैर जमीन पर रखें और आगे बढ़ें।
4. यदि जिस तिथि को स्वर हो, उसके विपरीत नासिका से स्वर निकल रहा हो, तो बिस्तर से नीचे नहीं उतरें और जिस तिथि का स्वर होना चाहिए, उसके विपरीत करवट लेट लें। इससे जो स्वर चाहिए, वह शुरू हो जाएगा और उसके बाद ही बिस्तर से नीचे उतरें।
5. स्नान, भोजन, शौच आदि के वक्त दाहिना स्वर रखें।
6. पानी, चाय, काफी आदि पेय पदार्थ पीने, लघुशंका करने, अच्छे काम करने आदि में बांया स्वर होना चाहिए।
7. जब शरीर अत्यधिक गर्मी महसूस करें, तब दाहिनी करवट लेट लें और बांया स्वर शुरू कर दें। इससे तत्काल शरीर ठण्डक अनुभव करेगा।
8. जब शरीर ज्यादा शीतलता महसूस करें, तब बांयी करवट लेट लें। इससे दाहिना स्वर शुरू हो जाएगा और शरीर जल्दी गर्मी महसूस करेगा।
9. जिस किसी व्यक्ति से कोई काम हो, उसे अपने उस तरफ रखें, जिस तरफ की नासिका का स्वर निकल रहा हो। इससे काम निकलने में आसानी रहेगी।

10. जब नाक से दोनों स्वर निकलें, तब किसी भी अच्छी बात का चिन्तन न करें। अन्यथा वह बिगड़ जाएगी, इस समय यात्रा न करें। अन्यथा अनिष्ट होगा। इस समय सिर्फ भगवान का चिन्तन ही करें। इस समय ध्यान करें, तो ध्यान जल्दी लगेगा।

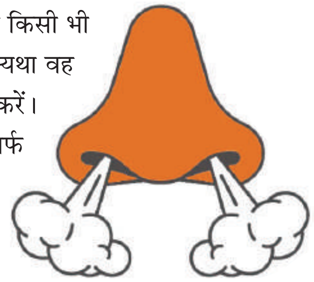

11. दांये स्वर में देव तथा बांये स्वर में देवी उपासना जल्दी फलती है। सुषुम्ना स्वर में निष्काम ध्यान करें।
12. दिन में स्वर को बार- बार बदलने का अभ्यास करें। इससे जवानी बनी रहती है।
13. जिस दिन उत्तरायण का सूर्य हो, उस दिन अर्थात मकर संक्रांति के दिन सूर्य स्वर होने से उत्तरायण के छह माह बढ़िया निकलते हैं और अकाल मृत्यु नहीं होती है।

    इसी प्रकार दक्षिणायन के पहले दिन को उठने के समय चन्द्र स्वर होने से दक्षिणायन के छह माह अच्छे गुजरते हैं। कहा गया है कि कर्के चन्द्रा, मकरे भानु, जीवन मरण का प्रश्न है जानूं। अर्थात कर्क का सूर्य हो, उस दिन स्वर वाम होना चाहिए, जबकि मकर का सूर्य होने के दिन स्वर दक्षिण होना चाहिए।
14. बीमारी या किसी भी कारण से सवेरे उठते समय निर्धारित तिथि का स्वर नहीं चल रहा हो और काफी प्रयास के बाद भी उस वांछित स्वर नहीं हो, ऐसी स्थिति में जो भी स्वर चल रहा हो, उस तरफ की हथेली का चुंबन ले लें और उसी तरफ का पांव आगे रखकर बिस्तर छोड़ दें।

    यह ध्यान रहे कि दांया स्वर चलने पर दाहिना पांव आगे रखें, जबकि बांया स्वर रहने पर पहले बांया पांव आगे रखें, उससे दाहिना पांव मिलाएं तथा फिर बांया पांव आगे रखकर आगे बढ़ जाए। किसी दिन कोई विशेष कार्य हो तो उस दिन बिस्तर छोड़ते समय जब पांव जमीन पर रखें, तब बांये स्वर का दिन हो तो सम संख्या में 2, 4, 6 बार बांया पांव पहले आगे रखें। यदि दांये स्वर का दिन हो तब विषम संख्या में दांया पांव 3, 5 या सात बार आगे कर बढ़ लें।
15. बांया स्वर सम तथा दांया स्वर विषम है।
16. पूजा- पाठ और ध्यान- साधना के लिए सुषुम्ना स्वर होना चाहिए। इसका अर्थ यह कि ये काम ऐसे समय हों, जब नासिका में दोनों तरफ से हवा आ रही हो। ऐसे समय में ध्यान या अनुष्ठान, साधना आदि करने से गहरा ध्यान लगता है और आनंद आने के साथ ही सफलता जल्दी मिलती है।

    यदि ध्यान में मन नहीं लग रहा हो तथा गहरा ध्यान करने की तीव्र इच्छा हो और उस स्थिति में सुषुम्ना नाड़ी नहीं चल रही हो तो सीधे खड़े हो जाएं और अपनी दोनों एड़ियों से कूल्हों पर प्रहार करें। इससे कुछ ही सैकण्ड में सुषुम्ना नाड़ी का प्रवाह आरंभ हो जाएगा।
17. रति के चरम पर स्वरों में संयोग से पुत्र या पुत्री की प्राप्ति सुनिश्चित होती है। पुत्र प्राप्ति के लिए पुरुष का दांया स्वर तथा स्त्री का बांया स्वर और पुत्री प्राप्ति के लिए पुरुष का बांया स्वर और स्त्री का दांया स्वर होना चाहिए।
18. स्वर की तिथि से वार का गहरा संबंध है। दांये स्वर की तिथि के दिन रविवार, मंगलवार व शनिवार हो, तो उस स्वर का महत्त्व बढ़ जाता है। इसी तरह बांए स्वर की तिथि में सोमवार, बुधवार, गुरुवार या शुक्रवार हो तो इस दिन स्वर का प्रभाव दुगुना हो जाता है।
19. स्वरों के माध्यम से प्रेम और आत्मीय संबंधों में स्थायित्व और प्रगाढ़ता का निश्चय भी होता है। आप जिसे चाहते हैं उसके समीप जाने पर या हाथ मिलाते समय जो भी स्वर चल रहा हो, उसे अपने अंदर की तरफ खिंचते हुए उसकी अगवानी करें। आपके कमरे में उसके पांव रखते ही अपना स्वर अन्दर खींच लें, इसी प्रकार उसके कुर्सी पर बैठते समय या हाथ मिलाते समय भी अपना जो भी स्वर चल रहा हो उसे अंदर की ओर खींचें। इससे आकर्षण बढ़ता है और ऐसे संबंधों में प्रगाढ़ता तथा स्थायित्व आता है।
20. जिससे आप घृणा करते हैं या जिसे नहीं चाहते हैं वे जब भी आपके सम्पर्क में आएंए आपसे हाथ मिलाएंए ज्से समय अपनी जो भी साँस चल रही होए उसे झटके से बाहर की ओर फेंक दें। इससे वह व्यक्ति थोड़े समय बाद ही वहाँ से चला जाएगा।
21. अपने किसी भी काम के लिए किसी के पास जाना पड़े तो उससे पहले स्वर देख लें। अच्छा सौम्य काम है तो बांया स्वर तथा क्रूर काम, शिकायत आदि के लिए दांया स्वर उपयुक्त रहता है। यदि ये स्वर पूर्ण चल रहे हों तो कार्यसिद्धि में सहायता प्राप्त होती है।
22. किसी से काम हो तो उसे अपने उसी तरफ रखें, जिस तरफ अपनी सांस निकल रही हो। अर्थात् बांया स्वर होने पर उसे अपने बांयी ओर रखें, जबकि दाहिनी सांस होने पर उसे अपने दाहिनी ओर रखें। इससे पूर्ण सफलता मिलती है और जिससे काम हो, वह अपने अनुकूल बना रहता है।
23. जब भी कपड़े पहनें, उस तरफ से पहनना शुरू करें, जिस तरफ से अपनी सांस का आवागमन हो। कपड़े हाथ में लेते तथा पहनते हुए सांस अन्दर की तरफ खींचें तथा जीवंरक्ष का उच्चारण करते हुए कपड़े पहनें। इससे ये वस्त्र अपने लिए हितकर बने रहते हैं तथा शरीर के लिए अभेद्य सुरक्षा कवच का काम करते हैं।
24. वे लोग योगी होते हैं, जिनके स्वर संकल्प मात्र से बदलने लगते हैं। ऐसे योगियों के स्वर दिनभर चन्द्र और रातभर सूर्य होते हैं।
25. एक हाथ से भारी वस्तु थोड़ी देर उठाए रखने पर दूसरी तरफ का स्वर अपने आप बहने लगता है। दांये हाथ से भारी वस्तु उठाए रखने पर बांया स्वर तथा बांये हाथ से भारी वस्तु उठाए रखने पर दांया स्वर शुरू हो जाता है।
26. कुर्सी पर बैठे- बैठे ही स्वर बदलना हो तो मुट्ठी भींच कर काख में दबा लें। दांये हाथ की मुट्ठी बांयी काख में दबाए रखने पर दांया स्वर तथा बांये हाथ की मुट्ठी भींच कर दांये हाथ की काख में दबाये रखने पर बांया स्वर शुरू हो जाता है।

दीपक आचार्य
लेखक व साहित्यकार
बांसवाड़ा, राजस्थान

आध्यात्मिक तपोभूमि सूरजकुण्ड

किसी स्थान के बारे में सुनने के बाद उसके प्रति रहस्य और रोमांच बढ़ना स्वाभाविक है। पहले पैदल चलकर देवो के देव महादेव के दर्शन कर महाशिवरात्रि मना ली। ऐसा मानकर थका हारा वापस घर आकर सो जाता और लगभग सभी पैदल यात्री ऐसा ही करते और सांयकालीन दर्शन अपने घर शहर के आस पास करते।

कुछ साल पहले अखबार में पढ़ा कि कुम्भलगढ़ क्षेत्र के सूरजकुण्ड में महाशिवरात्रि की भव्यता कुछ अलग ही होती। सूरजकुण्ड जहां पहुंचने के लिए लगभग 5 किलोमीटर की नदी की पगडंडी से पैदल जाना होता है, जो कि वन्यजीव अभ्यारण की सीमा में आता है और दुर्गम वन क्षेत्र है।

जैसा अखबारों में पढ़ा कि महाशिवरात्रि पर हजारों दीपक की ज्योति से महादेव की चार पहर की पूजा विधि विधान से होती है। बैंड बाजे की धुन पर शिवशक्ति का शृंगार और महाआरती होती है। ऐसा प्रतीत होता है, जैसे हम महादेव महागौरी के विवाह के साक्षात दर्शन कर उसमें अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे।

आज से 7 साल पहले उस दिव्यशक्ति के आकर्षण से मुझे भी इस अलौकिक महाभव्य महाशिवरात्रि में सम्मिलित होने का अवसर मिला। जहां पैदल पहुंचने में सबकी सांसे फूल जाती, वहां सैंकड़ो, हजारों भक्तों के लिए अटूट लंगर भोजनशाला, मां अन्नपूर्णा के चमत्कार से ही सम्भव है।

किवंदिति है कि पाण्डवकाल में अज्ञातवास के समय इस दुर्गम वन क्षेत्र में माता कुन्ती की प्यास बुझाने के लिए अर्जुन ने बाण चलाया और उस बाण से पाताल लोक से जल निकल आया और आज हम उसे ही सूरजकुण्ड के नाम से जानते हैं।

इस स्थान की ख्याति और ज्यादा अब इसलिए भी हो गई कि इस तपोभूमि पर ब्रह्मचारी गुरुदेव अवधेशानंद जी तपस्या करते हैं। पिछली शिवरात्रि पर मुझे और मेरे पुत्र धनुष को चार पहर में से दो अलग अलग पहर में महादेव के रुद्राभिषेक का पुण्यलाभ मिला, जो हमारे जीवन की एक बड़ी उपलब्धि है।

महाशिवरात्रि पर इस आध्यात्मिक तपोभूमि पर राजस्थान सहित भारत के अन्य प्रान्त के श्रद्धालु आते हैं और पूरी रात अलग अलग स्थानों पर भजन कीर्तन, ध्यान साधना करते हैं। हजारों की संख्या में आए श्रद्धालुओं के लिए महादेव की माया से इस छोटे से प्राकृतिक मंदिर प्रांगण में सारी व्यवस्थाएं अनुशासित सम्पन्न होती है।

शंकर सचदेव
यात्रा वृतांत
सचदेव बेकरी, कांकरोली

द्वारिका में बस जाओ

वृंदावन में मत भटको राधा,
बंसी सुनने तुम आ जाओ।
कान्हा पर ना इल्जाम लग,
फिर तुम उसकी हो जाओ।।

रुकमणी, सत्या, जामवंती संग
तुम द्वारिका में बस जाओ।
छोड़ आया तुझे तेरा कान्हा,
ऐसा इल्जाम ना लगाओ।।

पूछो हाल जरा कान्हा का,
जो सुन राधा तड़प उठे।।
वो धुन कहां अब बंसी में,
जो राधा प्रेम में बज उठे।।

राधा राधा कान्हा पुकारे,
तुम हो कान्हा की प्यारी।
तुम वृंदावन में,
रुक्मणी महल में,
फिर भी तुम राधा रानी।।

वृंदावन में राधा मत भटको,
अधर प्रेम पूर्ण कर जाओ।
जग की चिंता छोड़ तुम राधा,
अब मेरी द्वारिका में बस जाओ।।

अंकुर सिंह
हरदासीपुर, चंदवक
जौनपुर, उ.प्र. .222129
मोबाइल . 8367782654
व्हाट्सअप . 8792257267
ईमेल : ankur3ab@gmail.com

बड़े लोग वाकई बड़े होते हैं

बड़े लोग वाकई बड़े होते है
बड़े लोग खजूर की तरह बड़े होते हैं
नहीं देते किसी को छाया
बड़े लोग बरगद की तरह बड़े होते हैं
अपने तले किसी को पनपने नहीं देते

बड़े लोग हाथी की तरह बड़े होते हैं
जो हमेशा अपनों को ही कुचल देते हैं
बड़े लोग मगरमच्छ की तरह बड़े होते है
स्वयं पसर कर छीन लेते सभी की जगह

बड़े लोग अजगर की तरह बड़े होते हैं
छोटे लोगों का निवाला निगल जाते हैं
बड़े लोग शेर की तरह बड़े होते हैं
जो सदा कमजोर का शिकार करते हैं
बड़े लोग पहाड़ की तरह बड़े होते हैं
जो दूर से ही अच्छे लगते हैं

कुछ बड़े लोग बड़े होकर भी
इन अवगुणों को छोड़ देते हैं
वास्तव में ये ही लोग बड़े लोग है
सभी जगह सम्मान पा जाते हैं
बड़े लोग वाकई बड़े होते है ।।

नारायणसिंह राव 'निराकार'
साहितत्यकार, आमेट
साकेत साहित्य संस्थान
गणेश नगर, राजसमंद

बदलाव

नहीं पहनाता कोई अब
सोने की पगड़ी किसी को,
वे लोग भी अब कहां रहे
जो बनाया करते थे
सोने के महीन तार,
बुना करते थे
तल्लीन होकर ताने- बाने
यशोगान करते हुए,
भर देते थे
अपनी सम्पूर्ण कलाकारी,
श्रद्धा और
आत्मीय संवेदनाएं
पगड़ी में
जो प्रतीक हुआ करती थीं
आदमी के
महामानव होने की।

डॉ. दीपक आचार्य
साहित्यकार, लेखक
बांसवाड़ा, राजस्थान
मो. 9413306077

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan
News

विसंगतियों की पोल खोलता व्यंग्य संग्रह सब चकाचक है...

प्रकाशित व्यंग्य संग्रह सब चकाचक है... सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, तकनीकी, साहित्यिक आदि सभी क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों पर तंज युक्त रचनाओं का समावेश है। व्यंग्यकार विनोद कुमार विक्की की रचनाओं के साथ कार्टूनिस्ट अमरेंद्र की व्यंग्यात्मक रेखा चित्र ने संकलन को विशिष्ट बना दिया है। संग्रह की कुल 26 रचनाओं में भक्त की अभिलाषा और सब चकाचक है... रचना में व्यंग्यकार ने भारतीय वीवीआइपी और भारत में व्याप्त सामाजिक वर्गों के बीच की खाई का काफी अच्छा चित्रण किया है।

मस्त मौसम बाढ़ का, मुखिया उम्मीदवार, वोटर केयर सेंटर में आपका स्वागत है, घर वापसी आदि रचनाओं में लेखक द्वारा राजनीतिक विद्रूपताओं पर जमकर कलम चलाई गई है। इसी प्रकार अफसरशाही के ऊपर लिखी गई रचना 'सर का असर' संकलन की बेहतरीन रचनाओं में से एक है।

संग्रह की सभी व्यंग्य रचनाएं अच्छी है, जिनका सरोकार यथार्थ और वर्तमान परिदृश्य से है। भ्रष्टाचार एक्सप्रेस, अहं भ्रष्टाचारास्मि में सर्वव्यापी भ्रष्टाचार पर कटाक्ष किया गया है, इसी प्रकार फेसबुकबंदी का खौफ, डिजिटल क्रांति आदि रचनाओं में तकनीक के गुलाम हो चुके लोगों के ऊपर कटाक्ष किया गया है। तथाकथित साहित्यकार जो छप जाने की लालसा में कुछ भी लिख कर साहित्य का कबाड़ा कर रहें हैं, उन लोगों के ऊपर लिखी गई रचना सर्वरस संपन्न कवि काफी मजेदार है। आपदा में अवसर शीर्षक के तहत लेखक ने काफी बेहतरीन तरीके से यह बताने की कोशिश की है कि संकट के दौरान किस प्रकार घर बैठे डिजिटल समाजसेवी, मदद की बजाय मोबाइल पत्रकार, आस्तिक प्रवृत्ति का विकास एवं बिना लेखा- जोखा वाले सरकारी राहत फंड का विकास होता है।

संकलन की रचनाओं में व्यंग्यात्मक धार है, कटाक्ष है और तीखापन है। फिर से सुनने के लिए स्टार दबाएं, मेन मेन्यू में जाने के लिए आठ दबाएं अथवा अपने क्षेत्र के शिक्षित, कर्मठ, लगनशील, सुयोग्य उम्मीदवार से संबंधित सभी प्रकार की छोटी बड़ी जानकारी हेतु हमारे वोटर केयर एक्जीक्यूटिव से बात करने के लिए 9 दबाएं। मैंने

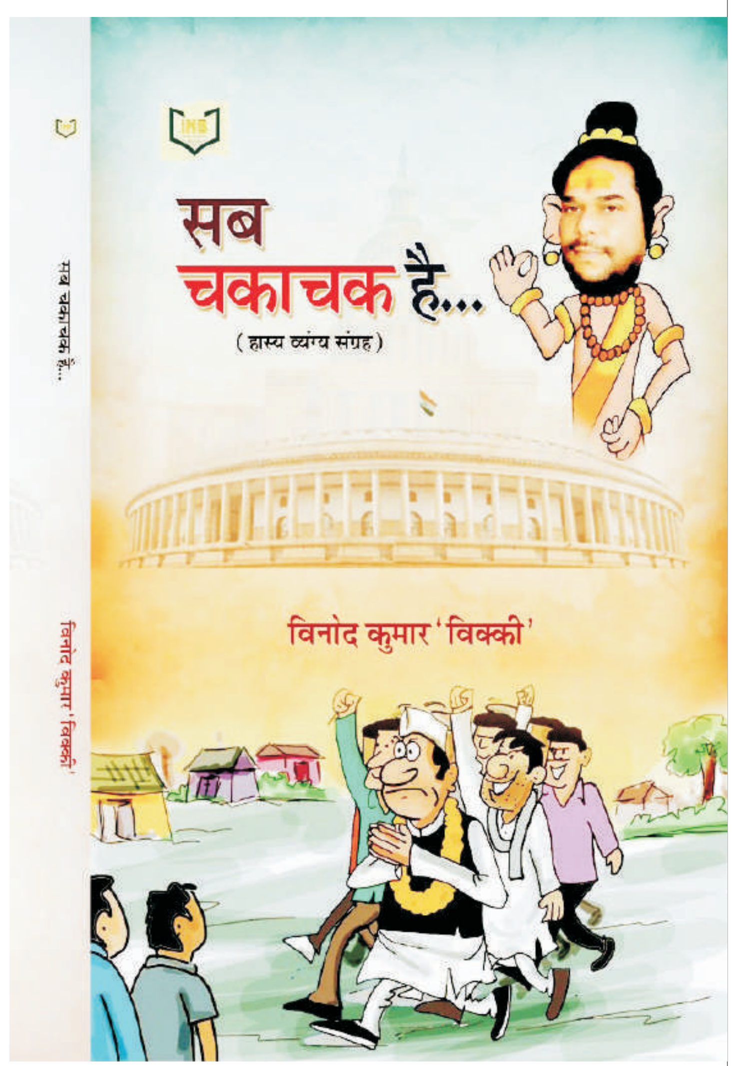

कम्प्यूटरीकृत आवाज से उलझने की बजाय नौ दबाकर सीधे-सीधे वोटर केयर एक्जीक्यूटिव से बात कर क्षेत्र के सुयोग्य उम्मीदवार के बारे में जान लेना उचित समझा।

'आपकी कॉल हमारे लिए महत्वपूर्ण है। शीघ्र ही आपकी बात हमारे वोटर केयर एक्जीक्यूटिव से होने वाली है, कृपया लाइन पर बने रहे...' की ध्वनि के साथ शास्त्रीय संगीत के रिंगटोन पर पूरे पंद्रह मिनट तक लटकाए रखने के बाद दूसरी ओर से आवाज आई, क्षमा करें। आपने गलत विकल्प चुना है और दूसरी ओर से फोन डिस्कनेक्ट कर दिया गया। वोटर केयर सेंटर में आपका स्वागत है... में लेखक ने समाजसेवा के नाम पर चुनाव को अपना व्यवसाय बनाने वाले नेताओं पर करारा तंज कसते हुए राजनीतिक सच को उजागर करने का प्रयास किया है।

मैं शिक्षित धरमपत्नी हूं... मैं हिन्दू स्त्री धर्म एवं संस्कृति की घिसी-पिटी मान्यता को नहीं मानती हूं। मैं हिन्दू नारी के फर्ज को भी नहीं जानती हूं। मैं जानती हूं तो सिर्फ हिन्दू विवाह अधिनियम को अपने संस्कार के कारण मेरे साथ दाम्पत्य जीवन में यदि भूल से भी तुम्हारे मन में मातृ- पितृ- भ्रातृ स्नेह और दायित्व का बीज फूटा तो याद रखना, घरेलू हिंसा एक्ट, दहेज उत्पीड़न, यौन उत्पीड़न सहित ढेर सारे कानूनी फल देने से मुझे एक परशेंट भी गुरेज नहीं होगा।

मैं मॉडर्न धरमपत्नी हूं। यह और बात है कि मोबाइल लैपटॉप पर व्यस्तता के कारण मैंने हिन्दू परंपरा को नहीं जाना। सती अनुसुइया, सावित्री, सीता, द्रोपदी, पद्मावती आदि जैसी पतिव्रता या फिर सास- ससुर की सेवारत हिन्दू नारी चरित्र को नहीं जान पाई। ना ही मैंने रामायण पढ़कर एक पत्नी, बहू, भाभी के फर्ज को समझने का बोरिंग काम किया, किंतु गृह उद्योग में उत्पादित मां- बुआ प्रदत्त सीखा, बुद्धि मंत्र, कानूनी हिन्दू मैरेज एक्ट 1955, कानून द्वारा स्त्रियों को दिए गए अधिकार आदि के सही गलत प्रयोग पर पूरा पीएचडी कर रखा है।

जिस प्रकार संविधान में उल्लेखित मौलिक कर्तव्यों के पालन की बजाय नागरिक सिर्फ और सिर्फ मौलिक अधिकार का उपयोग करना जानते हैं, उसी प्रकार मैं भी एक पत्नी का ससुराल के प्रति कर्तव्य या दायित्व की बजाय सिर्फ और सिर्फ पत्नी अधिकार के बारे में ही जानती अथ धर्मपत्नी महात्म्यद्ध उक्त रचना शीर्षक के अंतर्गत वर्तमान में आपसी तालमेल की बजाय कानूनी दांवपेंचों में बर्बाद हो रहे दांपत्य जीवन के यथार्थ से रूबरू कराया गया है।

भ्रष्टाचार के ऊपर व्यंग्य बाण निम्न प्रकार चलाया गया है। जरूरतमंद यात्रीगण कृपया ध्यान दें... भ्रष्टाचार की पटरी पर सरपट दौड़ते सभी छोटे-बड़े सरकारी कार्यालय, प्राइवेट स्कूल, प्राइवेट अस्पताल होते हुए पुलिस स्टेशन को जाने वाली करप्ट नज़राना एक्सप्रेस जल्द ही बेईमानी के प्लेटफार्म संख्या 420 पर आने वाली है। 'भ्रष्टाचार एक्सप्रेस'

ऐसे ही एक से बढ़कर एक अच्छी व्यंग्य रचनाओं का समावेश है सब चकाचक है...।

विनोद विक्की की इस संग्रह की हास्यपुट युक्त रचनाएं हमें गुदगुदाती है, तो साथ ही साथ सोचने पर मजबूर भी करती हैं। व्यंग्य में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए यह पुस्तक वर्ष 2023 का उत्तम साहित्यिक उपहार साबित हो सकता है।

पुस्तक : सब चकाचक है... 'हास्य व्यंग्य संग्रह'
लेखक : विनोद कुमार 'विक्की'
प्रकाशक : इंडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली
मूल्य : 200 रुपए, पृष्ठ : 87
आईएसबीएन : 978-93-95503-03-7

श्याम कुमार मिश्रा
समीक्षक
कल्याण पदाधिकारी, मजार गली,
राजा बाजार, पटना (बिहार)

कटाक्ष

सोशल साईट्स पर आत्म प्रचार और चापलुसी हावी

फेसबुक हो या दूसरी सोशल साईट्स, नब्बे फीसदी लोग गुड मॉर्निंग, गुड नाईट, गुड नून, बधाई, शुभकामनाओं, आरआईपी, श्रद्धांजलि, भगवान के फोटो और स्लोगन, लाईक और शेयर करने में ही रमे हुए हैं। केवल दस फीसदी लोग ही ऐसे होंगे, जो मौलिक विचार रख रहे हैं, समाज और देश के लिए चिंतन करते हुए विचारोत्तेजक लेखन कर रहे हैं।

बहुत सारे आत्मप्रचार का रस लेते हुए आत्ममुग्ध हैं, उन्हें दूसरों के बारे में सोचने, पढ़ने और लाईक, शेयर करने की कोई चिन्ता नहीं है। कई सारे लोग ज्ञानी और दीर्घ अनुभवी हैं, लेकिन वे सदियों से रक्त में घुसी हुई गुलामी का परिचय देते हुए अपने ज्ञान और अनुभव से जनता को लाभान्वित करने की बजाय चापलुसी में रमे हुए हैं और उन विषयों पर समय बर्बाद कर रहे हैं, जिनका आमजन से किसी प्रकार का कोई वास्ता नहीं है।

इन लोगों की स्थिति उन ऊंटों या पशुओं की तरह ही है, जो खूंटे के पास बैठे हैं और उन्हें भ्रम है कि उनके आकाओं ने गले में रस्सी डाल रखी है।

सोशल साईट्स का बेहतर उपयोग तभी है, जब हम समाज और देश की उन्नति और विकास के लिए वैचारिक क्रांति कर पाने में सक्षम हों, निर्भीक होकर बुराइयों- समस्याओं, भ्रष्टाचार और शोषण के खिलाफ आवाज उठाएं। लेकिन सच यह भी है कि आवाज तभी निकलती है, जब पेट में हराम का दाना- पानी न हो, पुरुषार्थ की कमाई के सहारे जिन्दा हो, अन्यथा जैसा अन्न वैसा मन और जैसा मन वैसी वाणी, व्यवहार।

दासत्व और ओढ़ी हुई खालों से बाहर निकलें और अपने विराट व्यक्तित्व को पहचानें, ईश्वर प्रदत्त प्रतिभाओं का उपयोग करें, अपने आपको आत्महीनता से बाहर निकालें, वरना नरकगमन के बाद कोई पूछने वाला भी नहीं बचेगा और कोई जलांजलि देने वाला भी नहीं। उत्तर क्रिया और श्राद्ध की बात तो भूल ही जाएं।

डॉ. दीपक आचार्य
लेखक व साहित्यकार
बांसवाड़ा, राजस्थान

बच्ची और भेड़िया

सभी न्यूज चैनलों पर पांच वर्षीया अबोध मासूम के बलात्कार पश्चात हत्या की खबरें आ रही थी। चैनल वाले ब्रेकिंग न्यूज़ के रूप में पांच वर्षीय अहाना से जानवरों ने किया। एक सप्ताह तक ब्लात्कार..., वहशी ने मरने से पहले तक किया रेप..., अहाना बनी दरिंदगी का शिकार..., मासूमियत पर हैवानियत हावी... आदि शीर्षकों से न्यूज़ को फ्लैश कर रहे थे। क्या हुआ सात दिनों तक पांच साल की बच्ची के साथ पूरी दास्तान देखने के लिए आज रात 9 बजे देखिए हमारा विशेष कार्यक्रम 'सात दिन' बजे देखिए। वहशी भेड़िये के बीच बच्ची और ग्यारह बजे हैवानियत की बलिबेदी पर एक और मासूम लड़की..., कब तक बेटियां होती रहेगी दरिंदगी की शिकार... आदि विशेष कार्यक्रम का बीच- बीच में विज्ञापन आ रहा था। कमोबेश हर चैनल पर अहाना रेपकांड की ही चर्चा हो रही थी।

संजय के पास बैठी उसकी छह वर्षीय बेटी निधि पूछ बैठी- पापा यह बलात्कार क्या होता है ?

मासूम निधि के इस प्रश्न पर संजय सन्न रह गया। इससे पहले वह कुछ बोल पाता, उसकी बेटी आगे बोल पड़ी- पापा रेप केवल लड़कियों के साथ ही क्यों होता है ? और यह भेड़िये कैसे बच्चियों को पकड़ लेते है ? उसके बालमन में इस प्रकार के ढेर सारे प्रश्नों का पनपना संजय को विचलित कर गया।

वह समझ नहीं पा रहा था आखिर बालमन को कैसे समझाया जाए। उसने बातों को बहलाने के ख्याल से कहा- ऐसा है बेटा, जो बच्ची अपने मम्मी- पापा की बात नहीं मानती तो उसे जंगल के भेड़िये पकड़कर ले जाते है और मार देते हैं ?

पापा की बात सुन निधि सहम गई। फिर बड़ी मासूमियत से भय मिश्रित शब्दों से बोली मैं हमेशा अपने मम्मी- पापा की बात मानूंगी। खेलने के लिए भी मोहल्ला या कॉलोनी से दूर नहीं जाऊंगी, नहीं तो यह जंगल के भेड़िये मुझे भी उठाकर ले जाएंगे और मेरा रेप कर मुझे... वह पूरी बात कह पाती, इससे पहले ही संजय ने उसे अपने सीने से लगा लिया और मन ही मन चिंतन करने लगा कि इस बालमन को कैसे समझाया जाए कि वहशी भेड़िया जंगल की बजाय तथाकथित सभ्य समाज और मोहल्ले में हमारे ही बीच रहता है।

विनोद कुमार 'विक्की'
महेशखूंट बाजार,
खगड़िया (बिहार) 851213
मो. 7765954969

स्व. मधु का प्रेरक जीवन

उदयपुर जिले के मावली गांव में स्वं कालुराम जी मिस्त्री के घर में माता श्री इन्दिरा देवी की कोख से दिनांक 5 अक्टूबर 1937 में एक बालिका का जन्म हुआ, जिसका नाम मधु कवीश्वरी रखा गया। मावली गांव के स्वछन्द वातावरण में पढ़ लिखकर जब विवाह योग्य हुई, तो कांकरोली के श्री नारायण लाल जी शर्मा उन्हें ब्याह कर कांकरोली ले आए। विद्या विनोदनी पास इस बालिका वधु ने यहां कांकरोली आते ही अध्यापिका की नौकरी कर ली और अपनी गृहस्थी में मग्न हो गई। अपनी राजकीय सेवा व घर गृहस्थी के साथ - साथ विभिन्न सेवा कार्यों में भी आपकी रूचि थी, तो आपने कईं सेवाभावी संस्थाओं की सदस्यता ले मानव सेवा में भी कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। वे लायन्स, लायनेस, भारत विकास परिषद एवं विश्व हिन्दू परिषद जैसी सेवाभावी संस्थाओं की सदस्य बन पीड़ित मानवताओं की सेवा में अपना योगदान देने लगी। रक्तदान, वन विभाग व मोक्ष धाम में पौधारोपण, नेत्रदान, पशुओं व मनुष्यों के लिये पीने के पानी की प्याऊ निर्माण में भी संलग्न रही।

साहित्य में भी इनकी गहरी रूचि थी। इन्होंने कई कविताएं लिखी, इन कविताओं का एक संकलन भी निकाला, जिसमें नारी सशक्तिकरण की कई सामाजिक सारोकार की रचनाएं थी। सन् 1956 से 1994 तक वे राजकीय सेवा में रही। गुणात्मक शिक्षण , शैक्षिक प्रशासन के साथ साक्षरता एवं प्रोढ़ शिक्षा के अभियान में भी आपने सक्रिय योगदान दिया। आपने लक्ष्य प्रयासों से राजकीय विवेकानन्द प्राथमिक विद्यालय सूरजपोल का अपने स्तर पर प्रयास कर व लोगों की सहायता से भवन निर्माण का कार्य करा सरकार को समर्पित किया और उसको क्रमोन्नत करवाने का कार्य किया है। वे प्रधानाध्यापिका के पद से 1994 को सेवानिवृत हो गई। अपने अथक प्रयासों से उन्होंने जो भी सदकार्य किए उनका पुरस्कार भी उन्हें मिला। सन् 1985 में राज्यपाल द्वारा राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान, शिक्षक संघ, जिला स्तरीय सम्मान, लायंस एवं लाइनेस व रेडक्रास द्वारा रक्तदान में सहयोग हेतु पुरस्कार एवं कलेक्टर द्वारा अनेक बार सामाजिक सहभागिता हेतु सम्मानित भी किया गया।

सेवानिवृति के बाद स्वं. श्रीमती मधु कवीश्वरी अपने बाल्यकाल से ही धार्मिक विचारों वाली व धर्म कर्म में विश्वास करने वाली थी। गायत्री शक्तिपीठ की वे कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में भिन्न भिन्न गांवों का दौरा कर महिला उत्थान के लिए कार्य किया करती थी। उन्होंने विभिन्न गांवों में लगभग 24 महिला सत्संग संगठनों की स्थापना की तथा नियमित रूप से धर्मार्थ कार्यों में समय व अंशदान किया करती थी। अध्यात्म में भी आपकी रूचि थी। वे कई साधु संतों के साथ अध्यात्म पर सत्संग किया करती थी। अपनी सेवानिवृति के बाद तो वे आध्यात्मिकता की ओर इतनी आशक्त हुई कि संत साध्वी श्री ऋतम्भरा के साथ कई दिनों तक भारत भ्रमण पर निकल गई और ऋतम्भरा के आश्रम में ही रहने लगी। संतो की तरह ही आचरण और व्यवहार और वेशभूषा भी संतो के जैसी ही कर ली थी। अपने भरे पूरे परिवार के साथ वे अपने निवास से ही सामाजिक व धार्मिक गतिविधियों में सलग्न हो गई और सामाजिक कार्यों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेने लगी। अपने परिवार को प्यार व प्रेम के साथ रखने में भी उन्होंने कई प्रयास किए। अपने पुत्रों व पुत्रियों को अच्छी शिक्षा व संस्कार दिए। परिवार के सभी पुत्र व पुत्रियां एक अच्छे नागरिक की तरह अपना जीवन यापन कर रहे हैं। महिला सशक्तिकरण की मिसाल ऐसी विदुषी महिला को हमारी हार्दिक श्रद्धांजलि।

अफ़जल खां अफ़जल
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की, राजसमंद

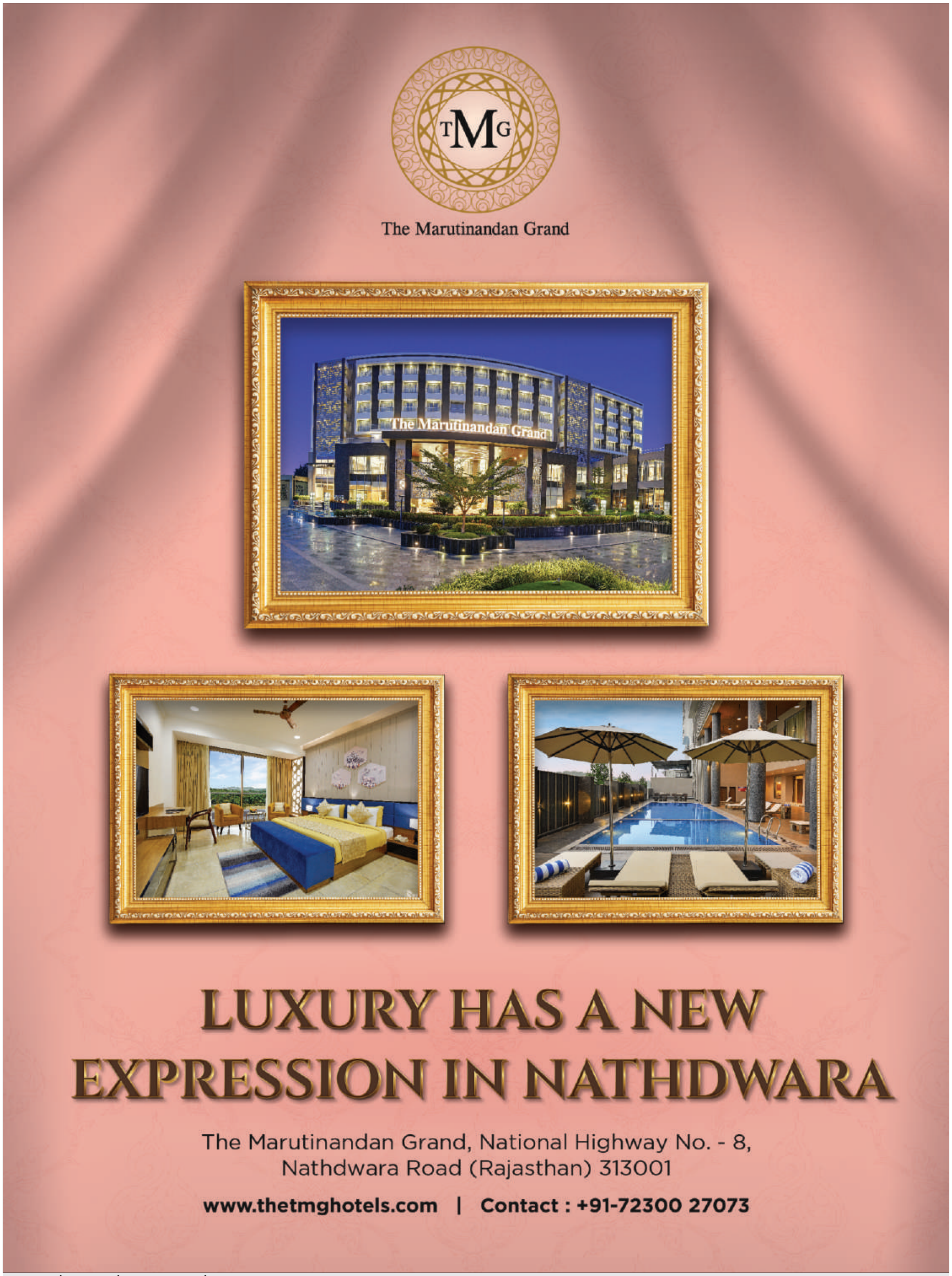
TMG
The Marutinandan Grand
The Marutinandan Grand
LUXURY HAS A NEW
EXPRESSION IN NATHDWARA
The Marutinandan Grand, National Highway No. - 8,
Nathdwara Road (Rajasthan) 313001
www.thetmghotels.com | Contact : +91-72300 27073

पराये खातर जीव खपावणो

आभे मायं सू पाणी रो एक टपो टप-टप व्हीर व्हीयो। मारग मांय एक रूंखड़ा री नवकूंपल उणने रोक र पूछ्यो कि पामणा आज कठे जावण री त्यारी हैं। पाणी रो टपो बोल्यो के सूरज भगवान समंदर माथे कोप कर रिया है। समन्दर सूख्यो जाय रियो है। मूं समन्दर री मदद हारू जाय रियो हूं।

नवकूंपल बोली- रेवा दें, आज तांई कोई आपने मेट अर कीणी दूजां री मदद कोनी दीदी है। छोटे मुंडे मोटी वात मती कर। वो तो समंदर है, वणी रे हाथे थारी के खिमता ? सूरजड़ा ने दीवलो वतावा जसी वातां मती करो अर नूवां-नूवां पाना री सेजां सज्योड़ी है। छणिक ठहर अर आराम कर ले। चार दिनां री जिन्दगानी है, मौज कर लें। पराये दुःख दुबलो नी वेणो।

पाणी रे टपके तो नवकूंपल री हुणी अणहुणी कीधी अर आपणी मंजिल री तरफ बढ़तो रियो। समन्दर माय पड़ ने उण री मदद रा नशा मायं समन्दर री हामु आगे बढ़ियो। स्वाति नक्षत्र हो अर जोग सूं एक सीप मुंडो खोल राख्यो हो, हवा रा झोंका सू पाणी रो टपो सीप मायं पड़ ग्यों।

समन्दर री लहरा सूं धीमी सी आवाज निकली कि जो खुद आपणे अस्तित्व री परवा नी करें अर पराया री सेवा में आपणो जीवन खपाय देवे, वो जनमानस रो मोती बण जावे हैं।

नारायणसिंह राव 'निराकार'
साकेत साहित्य संस्थान
गणेश नगर, राजसमंद

सन-शाईन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
RKCL का अधिकृत ज्ञान केन्द्र
Tally, DTP, PGDCA
प्रवेश प्रारम्भ
पुराना बस स्टैंड, ICICI बैंक के पास, केलवा
मो. 9649813798, 9950084705
फेक्ट्री चौराया, बस स्टैंड गांवगुड़ा मो. 9024034696

राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर के साथ सभी अखबारों में विज्ञापन प्रकाशित कराने का एकमात्र स्थान
शक्ति एडवरटाइजिंग
सभी प्रकार की खेलकूद सामग्री मिलने का राजसमंद में एकमात्र स्थान
शक्ति स्पोर्ट्स
शास्त्री मार्केट, कांकरोली (राजसमंद)
94142-39648, 94144-73275

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका

आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..

अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan
News

सन-शाईन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी

RS-CIT

एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स

RKCL
का अधिकृत ज्ञान केन्द्र

Tally, DTP, PGDCA

प्रवेश प्रारम्भ

पुराना बस स्टैंड, ICICI बैंक के पास, केलवा
मो. 9649813798, 9950084705
फेक्ट्री चौराया, बस स्टैंड गांवगुड़ा मो. 9024034696

आवश्यकता

मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : 9672980901

शक्ति स्पोर्ट्स

NIVIA VICKY COSCO SPORTS | FITNESS Reebok

सभी प्रकार
की खेलकूद सामग्री
मिलने का
राजसमंद में एकमात्र
विश्वसनीय स्थान

स्पोर्ट्स व GYM
आइटम होलसेल
रेट पर उपलब्ध है।

TLM सामग्री, दरी पट्टी,
भोजन पट्टी, अग्निशमन यंत्र,
लेक्टोमीटर, ट्रॉफी मोमेंटो, टी-शर्ट, लोवर,
विज्ञान प्रयोगशाला,
भूगोल प्रेक्टिकल सामग्री, पुस्तकालय की उपयोगी
पुस्तकों सहित सभी प्रकार के
सरकारी स्कूल की सामग्री उपलब्ध

शॉप नं. 10-11, शास्त्री मार्केट, कांकरोली जिला-राजसमंद
फोन नं. 02952-225137, 9414473275

जयवर्द्धन NEWS

जयवर्द्धन मल्टीमीडिया

कक्ष 108, द्वितीय मंजिल, नाकोड़ा आरकेड,
सौ फीट रोड, HDFC बैंक के पास, जिला राजसमंद
(राजस्थान) 313324, मो. 96729-80901

To,

Jaivardhan News Subscribe YouTube